मेघना
RAS साहिबा

Writer
Sarwat Shri Shaury

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Sarwat Shri Shaury 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-426-0

Cover design: Shariq Ansari
Typesetting: Simran Maurya

First Edition: June 2026

यह उपन्यास उन सभी विद्यार्थियों के नाम जो सपनों और जिम्मेदारियों के बीच रोज टूटते भी हैं, और फिर अगली सुबह खुद को जोड़कर दोबारा खड़े हो जाते हैं।

कुछ कहानियाँ पढ़ी नहीं जातीं महसूस की जाती हैं। ''मेघना RAS साहिबा'' केवल प्रेम कहानी नहीं है, यह संघर्ष, सपनों, परिवार, समाज और आत्मसम्मान की यात्रा हैं। यह कहानी उन लाखों युवाओं की आवाज है जो छोटे शहरों, गांवों से बड़े सपने लेकर निकलते हैं।

शायद इस कहानी में आपको अपना अतीत, अपना संघर्ष या फिर अपना अधूरा प्रेम दिख जाए।

याद रखना शरीर टूट जाए लेकिन, माँ बाप के लिए देखे सपने नहीं टूटने चाहिए।

आभार

मैं अपने माता–पिता, गुरूजनों एंव परिवार का हृदय से आभारी हूँ, जिनके संस्कार, विश्वास और त्याग ने मुझे इस योग्य बनाया कि मैं ''मेघना RAS साहिबा'' जैसी कृति लिख सकूँ।

विशेष धन्यवाद भाई रिछपाल जी गोदारा (SDM), भाई सुनिल जी मुण्डेल (RPS), भाई अमरा राम जी धूण (AP) एवं तत्कालिक ओटीएस ट्रैनी व ओटीएस परिवार एंव मेरे अपने JRA परिवार को जिनके संघर्ष, समर्पण और जीवन यात्रा ने इस उपन्यास को प्रेरणा प्रदान की।

साथ ही भाई आशा राम जी कॉंटवा, मोहन लाल जी यादव, किशन जी लोछब, हनुमान जी कागट, जितेन्द्र जी पारीक, अशोक जी पूनियाँ, मनीष जी पूनियाँ, अरूण जी जिन्होंने इस उपन्यास की प्रथम सीढ़ी से अंतिम सीढ़ी तक हर कदम पर साथ निभाया।

मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, भाई राजू राम जी नाला, Pona Sarpanch, Bank Wala Vikas, खींया राम जी बुराणियाँ, बीरमा राम जी मुवाल, मेघा राम जी, श्रीपाल जी, लाला राम जी कमेड़िया, मंशा राम जी, प्रिय दिनेश लेगा, ताराचन्द, अशोक जी पारीक, राजेन्द्र जुणावा, रामनिवास जी गोदारा, मनीष जी धूण, रामदेव जी ड़ारा, अशोक बेनिवाल, महावीर चौधरी (रूद्र का रहस्य), मनोज बेनिवाल, दीप चौधरी, मंजू बेनिवाल, साहिबा अनु, बहन मैना, लक्ष्मी मैम को जिन्होंने सोशिअल मीड़िया एंव अन्य किसी भी माध्यम से निरंतर समर्थन और मेरे उत्साह को बनाए रखा।

मैं कृतज्ञ हूँ भाई प्रकाश जांगिड़ और बहन पूजा और हृदय स्पर्श का जिनका गुड़ लक हमेशा से मेरे साथ रहा।

आभार उन नन्हें मुन्नों का भी जिनकी खामोशी भी सहयोग रही। बहन दिशा, तानिया, प्रिया, कोमल, सौम्या, पुरखा जी, भाई मुकेश, आदित्य, क्रिश।

आभार मेरी बुक प्रकाशन टीम–Blue Rose Publication.

अंत में उन सभी लोगों का धन्यवाद, जिनके विश्वास, स्नेह और सहयोग ने इस कहानी को शब्दों से पुस्तक बनने तक की यात्रा में प्रत्यक्ष एंव अप्रत्यक्ष सहयोग किया।

इस उपन्यास को पढ़ने बैठें तो साथ में एक हाईलाइटर अवश्य रखिएगा, क्योंकि इसके प्रत्येक पृष्ठ पर ऐसे भाव, विचार और पंक्तियाँ मिलेंगी जो सीधे हृदय में उतरकर लंबे समय तक आपकी स्मृतियों में जीवित रहेंगी।

इस लेखक की शब्दों रूपी प्रार्थना का सम्मान करने वाले उन सभी पाठकों का मैं बहुत आभारी रहूँगा जिन्होंने इस बुक को इतना प्यार और सम्मान दिया।

अनुक्रमाणिका

शरारतों वाला बचपन 1

गाँव से शहर को 5

पहली नजर 8

इज़हार 11

परवाह / शरारत / पागलपन 18

गंगा घाट 21

मोटिवेशन, प्रेम व स्मृति वन 25

फाइनल एग्जाम 31

बर्थ–डे स्पेशल 33

दुनियादारी (माँ बाप या प्रेम) 38

दुनियादारी (12th के बाद का रास्ता) 41

दुनियादारी (किसान) 45

मजबूरियाँ या वादा? 51

जुदाई 55

शादी के दिन की मुलाकात 65

पायल नहीं शराब 69

झीलों का शहर उदयपुर 74

खालीपन भरने की एक कोशिश 77

अंतिम मुलाकात 79

दर्द 82

दोस्त भगवान से कम नहीं 86

शरारतों वाला बचपन

कहते हैं, कुछ कहानियाँ जन्म के साथ ही लिखनी शुरू हो जाती हैं—बस उन्हें पढ़ने में समय लगता हैं। कुछ कहानियाँ प्रेरणा का स्त्रोत होती है तो कुछ कहानियाँ दुख की ऐसी पराकाष्ठा रखती हैं कि पढ़ते वक्त पढ़ने वाले की आँखों में सिर्फ आँसू ही नहीं झलक आते बल्कि वह महसूस करता है उस दर्द को। आज राजस्थान के छोटे से गाँव से निकली एक ऐसी ही कहानी से आपको, मैं रूबरू कराने जा रहा हूँ जिसको लिखना सिर्फ शब्दों का जोड़ नहीं है बल्कि लिखने के दौरान मैने उन अनुभवों को जी कर कागज पर उतारा हैं। इस छोटी सी कहानी से खुद को दूर बना कर रखना आसान हैं, परन्तु इसे पूरा पढ़कर पढ़ने वाले की आँखों में नमी न उतरे—यह संभव नहीं हैं।

आज से लगभग 27 साल पहले राजस्थान के एक छोटे से गाँव में इन्दर का जन्म किसी शोर—शराबे में नहीं, बल्कि एक साधारण सी सुबह में हुआ था। मिट्टी के आँगन में, जहाँ दीवारें कच्ची थीं, पर रिश्ते उतने ही पक्के। माँ ने जब इन्दर को पहली बार गोद लिया, तो जैसे पूरी दुनिया को थाम लिया हो। पिता ने उसे एक नजर देखा और फिर आसमान की तरफ देखने लगे, जैसे मन ही मन भगवान की बनाई इस रचना के लिए उनका धन्यवाद किया हो। दिन धीरे—धीरे बीतने लगे।

मिट्टी में खेलते, कभी नंगे पाँव खेतों में दौड़ते, तो कभी माँ के आँचल में छुपते छुपाते इन्दर धीरे धीरे बड़ा होने लगा। गरीबी उसके घर में जरूर थी, पर पिता के साये ने इसे इन्दर के एहसासों में कभी नहीं झलकने दिया।

समय के साथ साथ इन्दर का अपनी माँ से लगाव इतना बढ़ता चला गया कि उसे **दुनिया में माँ नहीं बल्कि माँ में दुनिया नजर आती थी।** सबके लाड़ ने उसे इतना बिगाड़ दिया था कि वह बिल्कुल बेफिकरा, मस्तमौला अपनी ही मस्ती में जीने लगा।

गाँव की गलियों में धूल उड़ती और उसी धूल के साथ वह लड़का भी हर रोज कहीं न कहीं भटकता रहता था। उसके मन में कोई तय रास्ता नहीं था। स्कूल की घंटी बजती तो कई बार उसका दिल उस आवाज को अनसुना कर देता।

''चलो यार, आज नहर चलते हैं, '' वह दोस्तों से कहता और अगले ही पल किताबें बस्ते में कैद रह जाती। और वह खुद आजादी के नाम पर जिम्मेदारियों से दूर भाग निकलता। नहर के किनारे बैठकर वह पानी में पत्थर फेंकता, हर लहर के साथ जैसे अपनी ही किसी उलझन को डूबोने की कोशिश करता।

घर लौटते ही माँ की आवाज उसका इंतजार करती–''कहाँ था, तू पूरे दिन?''

वह मुस्कुरा देता–''बस ऐसे ही दोस्तो के साथ।''

माँ गुस्सा होती, पर उसका गुस्सा ज्यादा देर टिकता नहीं था। वह थाली परोसते हुए धीरे से कहती–''तू समझ क्यों नहीं रहा बेटा हमारे पास खोने के लिए कुछ नहीं है, सिवाय तेरे।'' वह माँ को अनसूना कर देता। पर कहीं ना कहीं माँ की कहीं हुई हर बात उसे अंदर तक महसूस होती।

गाँव वाले उसे देखकर अक्सर कहते–''लड़का हाथ से निकलता जा रहा हैं।'' पर वह सबको अनसुना कर मस्तमौला रहता। पर हाँ इतना है कि उसके अंदर एक अलग ही जिद्द थी। वह पढ़ाई में क्लास में खुद को फर्स्ट रखने की कोशिश करता। और हमेशा उसकी जिद्द पूरी भी हुई।

टीचर्र्स, उसकी माँ, उसके पापा सब उसकी पढ़ाई से बहुत खुश थे। परन्तु उसकी शरारतों ने सबको परेशान कर रखा था। इन्दर में आत्म विश्लेषण करने और खुद को सही व गलत समझने की समझ जरूर थी। उसे पता था–उसकी हरकतें, उसकी शरारतें गलत जरूर हैं। पर वह उन्हें इग्नोर कर देता। रात को कभी–कभी वह छत पर लेट जाता, आसमान को देर तक देखता। तारों के बीच उसे अपनी जगह ढूँढनी होती थी–पर हर बार वह खाली हाथ लौट आता।

''मैं क्या करूँगा जिंदगी में?''–यह सवाल उसके भीतर आता जरूर था। पर वह उसे गंभीरता से लेने की उम्र में नहीं था। शायद उसका अभी गिरना बाकी था, शायद उसे अभी समझना बाकी था।

उसकी शरारतें कभी–कभी हद पार कर जाती थीं। एक दिन दोस्तों के साथ हँसी–मजाक में उसने पहली बार गुटका मुँह में डाल दिया। उसे लगा, यह भी बस एक खेल है–जैसे बाकी शरारतें होती हैं। पर जब वह घर लौटा तो माँ की नजरें उसके चेहरे पर ठहर गईं। माँ कुछ पल चुप रही। फिर धीरे से बोली–''ये क्या खाया तूने? '' उसने हँसकर बात टालनी चाही। पर माँ की आँखों में आज गुस्सा नहीं–एक डर था। पिता भी पास आकर खड़े हो गए। उस दिन उसे डाँट नहीं पड़ी बल्कि प्यार भरे शब्द थे–जो सीधे दिल तक उतर गए।

माँ ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा–''तू गलती करेगा, हमें मंजूर है पर ऐसा कुछ मत करना, जिससे हमें खुद से नजरें मिलाने में शर्म आए।

इन्दर पहली बार चुप था इतना चुप, जितना शायद पहले कभी नहीं हुआ।

पिता ने उसे अपनी ओर खींचा और गले से लगा लिया। उनकी आँखे नम थी। उनके शब्द लड़खड़ाते हुए कह रहे थे–बेटा तू हमारी पूरी दुनिया हैं। उसके पिता ने उसे बड़े प्यार से समझाया। उसके पिता अनपढ़ जरूर थे, पर नासमझ नहीं। वह जानते थे–**प्यार से कही गई बात, डाँट से कहीं ज्यादा गहरी होती हैं।**

यह इन्दर की पहली शरारत नहीं थी और आखिरी भी नहीं।

वह फिर शरारतें करता, कभी दोस्तों के साथ बहक जाता, कभी अपनी ही मर्जी को सही मान बैठता। पर हर बार एक चीज नहीं बदली–घर लौटने पर उसे डाँट नहीं, समझ मिलती।

माँ हर बार गुस्सा होने से पहले रूक जाती, जैसे उसे डर हो कि कहीं उसके शब्द बेटे के दिल पर बोझ न बन जाएँ। धीरे धीरे बातें इन्दर के अंदर उतरने लगी।

पहले वह सुनकर भूल जाता था, अब सुनकर सोचने लगा।

पहले गलती के बाद उसे फर्क नहीं पड़ता था, अब हर गलती के बाद एक हल्की सी चुभन रह जाती थी। यह बदलाव अचानक नहीं था–यह हर दिन, हर समझ, हर प्यार भरे शब्द का असर था।

उसके भीतर माँ का स्नेह और पिता की इज्जत धीरे–धीरे जगह बना रही थी। उसे धीरे–धीरे समझ आने लगा कि–''वह अकेला नहीं है उसके हर कदम के पीछे उसके माँ–बाप की उम्मीद खड़ी हैं।''

समय बीतता चला गया और उसने अपने गाँव से इन्हीं शरारतों के साथ 12 वीं स्टेण्डर्ड तक की पढ़ाई पूरी कर ली।

परिणाम आ चुका था। इन्दर इस बार भी अव्वल रहा और उसने ना केवल इस बार स्कूल टॉप किया बल्कि वह पूरी तहसील का टॉपर बना।

नंबर ठीक थे, पर जिंदगी के अगले पन्ने अब भी खाली थे।

इन्दर के चारो तरफ खुशियाँ थी पर उसके अन्दर एक सन्नाटा था–अब आगे क्या?

वह कई दिनों तक इसी उलझन में रहा। कभी खेतों की मेड़ों पर चलता, कभी छत पर लेटकर आसमान निहारता। पर इस बार सवाल बड़ा था, और जवाब कहीं दिखाई नहीं दे रहा था।

फिर एक दिन तय किया कि जवाब वह खुद ढूँढेगा। वह अपने स्कूल जी के मास्टर के पास गया, कुछ जानकार लोगों से मिला और पहली बार पूछना शूरू किया—''मुझे आगे क्या करना चाहिए? ''

यहीं से उसकी सोच बदलने लगी। किसी ने उसे प्रतियोगी परीक्षाओं के बारे में बताया, किसी ने प्रशासनिक सेवाओं की बात की। और इसी दौरान उसने ''आर ए एस'' का नाम सुना।

RAS से SDM बनते हैं। ''पावर होती है सम्मान होता है और चाहो तो समाज के लिए बहुत कुछ कर सकते हो।'' उसने चुपचाप सब सुना।

उसकी आँखों में पहली बार कोई सपना साफ—साफ दिखा—SDM I

यह शब्द उसके लिए सिर्फ एक पद नहीं रहा—उसके लिए एक रास्ता बना गया, अपनी दुनिया बदलने का और दूसरों की भी।

उस रात वह फिर छत पर लेटा था—पर इस बार आसमान अलग लग रहा था। अब वह तारों को गिन नहीं रहा था, वह उनमें अपनी जगह तलाश चुका था।

उसने मन ही मन कहा—''मैं SDM बनूँगा।''

पर यह फैसला आसान नहीं था, न ही उसके पास कोई बड़ी सुविधा थी—न सही गाइडेंस, न कोई सहारा। उसके पास थी तो थी एक—जिद्द। और जिद्द के पीछे माँ—बाप की उम्मीदें।

इन्दर को पता था—रास्ता लंबा है, मुश्किल भी होगा। पर जब वह अपने पिता कि आँखों में अपने लिए उम्मीद देखता तो उसे लगता—हाँ वो करेगा और निश्चित तौर पर करेगा।

गाँव से शहर को

समय आ गया जब इन्दर को गाँव छोड़ शहर की ओर जाना था। उसने जैसे तैसे पता करके जयपुर में Daring Board नामक कोचिंग में दाखिला ले लिया। आज सुबह धूप अभी पूरी तरह चढ़ी भी नहीं थी, लेकिन खेतों की मेड़ों पर सुबह की रोशनी ऐसे बिखरी थी जैसे किसी ने उम्मीद को हल्के–हल्के हाथों से धरती पर उतार दिया हो। दूर कहीं बैलों की घंटियों की धीमी आवाज, और पास ही चूल्हे पर चढ़ी हांडी से उठता धुआँ। आँगन में खड़ी उसकी माँ, आँचल से बार बार आँखें पोंछ रही थी, जैसे धूल चली आई हो–पर सच तो यह था कि धूल नहीं, एक दूरी का डर था, जो आँखों तक आ गया था। उसने धीरे से बेटे के कंधे पर हाथ रखा और कहा–

''शहर में अपने को संभाल के रखना और खाने पीने का ध्यान रखना।

इन्दर ने हल्की मुस्कान के साथ सिर हिलाया। उसके पास कहने को बहुत कुछ था– पर शब्द जैसे गले में ही अटक गए। शायद कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जहाँ बातों की जरूरत नहीं पड़ती, खामोशी सब कह देती हैं।

उसने अपना छोटा सा बैग उठाया–**जिसमें कपड़ों से ज्यादा सपने थे, और पैसे से ज्यादा जिम्मेदारियाँ।**

गाँव की पगडंडी पर चलते हुए हर कदम उसे पीछे खींच रहा था–वो नीम का पेड़, जिसके नीचे बैठकर उसने किताबें पढ़ी थीं। वो टूटी हुई चौपाल, जहाँ उसने दोस्तों के साथ हँसी बाँटी थी और वो मिट्‌टी जिसमें उसके पिता के पसीने की खुशबू बसी थी।

बस स्टेण्ड ज्यादा दूर नहीं था, लेकिन आज रास्ता कुछ लम्बा लग रहा था।

जब बस आई–तो उसने अपने पिता के चेहरे की तरफ देखा। वही चेहरा, जिस पर धूप ने सालों तक मेहनत की लकीरें खींची थीं वहीं आँखें, जो कम बोलती थीं, पर बहुत कुछ कह जाती थी।

पिता ने आगे बढ़कर उसके कंधे पर हाथ रखा–**हल्के से उस स्पर्श में जितनी ताकत थी, उतनी शायद शब्दों में कभी नहीं हो सकती।** ''ध्यान रखना '' बस इतना ही कहा।

लड़का कुछ कह नहीं पाया। उसने अपनी मुंड़ी हिला दी। वह बस इतना समझ पाया कि **आज वह अकेला नहीं जा रहा अपने साथ अपने पिता का विश्वास भी ले जा रहा हैं।**

बस का दरवाजा खुला। उसे लगा जैसे **वह सिर्फ बस में नहीं चढ़ रहा, बल्कि अपने बचपन से उतर रहा** हैं। उसने एक आखिरी बार पीछे मुड़कर अपने पिता को देखा– और पिता ने अपने आँसू छुपाने के लिए नजरें घुमा ली।

इन्दर ने मन ही मन कहा–यहाँ से जा जरूर रहा हूँ, मैं अँवारा बनकर, पर जब आऊँगा तो सिर्फ बेटा बनकर नहीं, आपकी पहचान बनकर।

बस अब चल पड़ी। सड़क अब कच्ची से पक्की हो गई। गाँव की सादगी शहर की रफ्तार में बदलने लगी। चारों तरफ नए चेहरे, नई आवाजें, और एक अनजाना सा शोर–जिसमें खुद को पहचानना भी एक चुनौती थी।

बस शहर की सीमा में दाखिल हुई, इन्दर को एहसास हुआ कि **यह सफर सिर्फ गाँव से शहर तक का नहीं है यह सफर एक लड़के से आदमी बनने का हैं।**

पहले दिन के जयपुर में इन्दर के मनोभावों को कोई भी लेखक शब्दों में नहीं उतार सकता, और मैं तो बिल्कुल भी नहीं। पर हाँ उन मनोभावों को महसूस किया जा सकता है हर उस इन्दर के द्वारा जो कुछ उम्मीदों के साथ अपना गाँव छोड़कर शहर आया हो।

शहर उसके लिए अनजान चेहरों का समुद्र था–हर कोई तेज, हर कोई व्यस्त, हर कोई मानो किसी अदृश्य दौड़ में भाग रहा हो। बस स्टैंड़ से लेकर किराए के छोटे से कमरे तक, उसने हर मोड़ पर अपने गाँव को याद किया। वहाँ की शांति, यहाँ के शोर में कहीं खो जाती थी।

अगली सुबह जब वह पहली बार अपनी कोचिंग के लिए निकला, उसके कदमों में संकोच भी था और संकल्प भी। कंधे पर साधारण सा बैग, और आँखों में एक ऐसा सपना, जो उसके पूरे परिवार की उम्मीदों से बुना गया था।

कोचिंग द्वार पर पहुँचते ही उसने सबसे पहले उसके द्वार पर नीचे झुक के प्रणाम किया। कक्षा कक्ष में बैठे छात्रों के मन में बैचेनी सी थी। पर इंदर की बेचैनी अलग थी–**वह केवल नौकरी नहीं, अपने पिता की झुकी कमर को सीधा**

करने आया था, केवल परीक्षा पास करने नहीं, अपने घर की किस्मत बदलने आया था।

पहले दिन वह चुपचाप जाकर बेंच पर बैठ गया। अध्यापक पढ़ा रहे थे, पर इंदर को शब्दों से अधिक अपने भीतर की आवाज सुनाई दे रही थी–''यहाँ हारने की जगह नहीं है क्योंकि पीछे लौटने के लिए अब कुछ बचा नहीं।''

उसने अपना रजिस्टर खोला, पहला पन्ना पलटा तो ऊपर लिखा था–**''संघर्ष ही मेरा परिचय है, और सफलता मेरी प्रतीक्षा।''** अचानक से इन्दर मस्तमौले और शरारती लड़के से भीतर ही भीतर एक समझदार और अंर्तमनन करने वाला लड़का बनता जा रहा था। समय के साथ इन्दर के वहाँ कुछ दोस्त बने। उसका कक्षा–कक्ष में मन लगने लगा। नये दोस्तो, अंर्तमन के सपने, अच्छे अध्यापको के बीच इन्दर के दिन बीतते चले गये।

पहली नजर

कुछ समय बाद, राजस्थान प्रशासनिक सेवा की तैयारी के दौर में इन्दर का अपना कक्षा सेक्शन चेंज हो चुका था। इन्दर रोज की तरह नई ऊर्जा के साथ नये कक्षा कक्ष में जा बैठा। जहाँ कुछ चेहरे जाने पहचाने एंव कुछ बिल्कुल अनजान थे। सर ने नये बच्चों से परिचयात्मक बातचीत की शुरूआत हंसी ठीठौली के साथ की। कुछ ने अपने परिचय के साथ साथ लघु कहानियॉ, कविताएं और जोक्स सुनाए। इन्दर भी उन्हें सुनकर हल्का हल्का मुस्कुरा रहा था। तभी मेघना की बारी आई, मेघना अपना परिचय देने के लिए कक्षा में सामने गई और इन्दर उसे देख ठहर सा गया–

इन्दर को वह साधारण नहीं लगी।

उसकी आँखों में झिझक नहीं, एक आत्मविश्वास था, हैलिकॉप्टर एंव मच्छर की दुर्घटना सुनाते समय उसके चेहरे के भावों ने इन्दर को मोहित कर लिया। **जैसे शब्द उसके होठों से नहीं, उसके भीतर के किसी सधे हुए संस्कार से निकल रहे हो।**

चेहरे पर सिर्फ सौंन्दर्य की बनावट ही नहीं थी,

बल्कि एक ऐसी सहज आभा थी, जिसने इन्दर को उस पर ठहरने के लिए मजबूर कर दिया।

उसकी मुस्कान छोटी सी थी, पर दिल को छू लेने वाली

मुस्कान में कोई आम चंचलता ही नहीं, बल्कि वह मुस्कान इन्दर की पलकों के बार बार बंद होने एंव उसे महसूस करने का कारण भी थी।

आवाज में मधुरता थी, पर शब्दों में दृढ़ता–जैसे वह जानती हो कि उसे क्या कहना है और क्यों कहना हैं।

हर वाक्य में एक **विनम्र साहस था और हर ठहराव में एक छुपा हुआ–इन्दर का स्पर्श।**

यह सब देख और सुन इन्दर के भीतर अचानक शोर नहीं उठा –

बल्कि एक अजीब सी शांति उतर आई।

हृदय ने कोई तीव्र धड़कन नहीं मारी,

पर **आत्मा जैसे पहली बार किसी परिचित स्पर्श से मिल गई हो।**

उसे समझ नहीं आया कि यह प्रेम है,

या **किसी अधूरे जीवन का अचानक पूरा हो जाना।**

पर इन्दर समझ गया था **यह आकर्षण नहीं बल्कि वह अनुभूति है जो बिना छुए ही पूरी तरह अपना बना लेती हैं।**

हैलिकॉप्टर मच्छर का ऐक्सीडेंट इन्दर ने न जाने कितनी बार पहले भी सुना था फिर भी आज यह पल पता नहीं क्यों उसके भीतर हमेशा के लिए रूक गया।

इस पल इन्दर में **प्रेम अंकुरित ही नहीं हुआ बल्कि वह प्रेम में उतर गया**–धीरे, गहरे और बिना शोर के।

इन्दर चाहता था कि वह बोलती रहे, और वह बस सुनता रहे। अब इन्दर के अध्ययन में एक नया अध्याय जुड़ गया, जिसका नाम था–मेघना।

अगले ही दिन इन्दर मेघना के पास वाली बेंच पर जा बैठा।

मेघना–''आप रोज यहीं बैठते हो? ''

इन्दर–नहीं पर अब शायद यहीं बैठूँगा, क्योंकि यहाँ डाऊट्स जल्दी सॉल्व हो जाते हैं।

मेघना ने बस एक नजर डाली–सीधी, साधारण, बिना किसी अर्थ के।

अब से इन्दर रोज मेघना के पास बैठने लगा। धीरे–धीरे दोनों के बीच बातें बढ़ने लगीं। पहले पढ़ाई, फिर सवाल, फिर छोटी–छोटी बहसें और फिर बिना किसी वजह के एक दूसरे की तरफ देख के मुस्कुरा देना।

कभी इन्दर जानबूझकर गलत जवाब लिख लाता ताकि मेघना उसे डाटते हुए सुधारे और थोड़ा वक्त उसके पास बैठी रही।

इन्दर कोई मौका नहीं छोड़ता जिससे की वो मेघना से बात कर सके। अब इन्दर को मेघना से डॉट खाने में भी सुकून नजर आने लगा। मेघना का डाँटते

हुए इन्दर के **सिर पर नोटबुक की मारना इन्दर का सबसे पसंदीदा पल होता था।**

मेघना आज क्लास खत्म होते ही कोचिंग से बाहर आ गई। बाहर हल्की बारिश शुरू हो गई। मेघना मजबूर सी बाहर आके खड़ी हो गई क्योंकि मेघना के पास छाता नहीं था।

इन्दर दूर खड़ा उसे देख रहा था। उसके पास छाता था—पर वह जानता था, सीधे जाकर देना शायद मेघना की सादगी को असहज कर देगा, जो मेघना की पहचान थी। इन्दर धीरे से आगे बढ़ा और बिना मेघना की ओर देखे, छाता उसे पकड़ा दिया।

मेघना—''और तुम?''

इन्दर—''मुझे बारिश में भीगना पसंद है।'' इतना कहकर इन्दर बारिश में भीगता हुआ झुमने लगा।

यह छोटी छोटी बाते इन्दर के दिल में प्यार के अंकुरित होने का परिणाम था, परन्तु मेघना अब भी सामान्य थी, उसके लिए इन्दर एक अच्छा दोस्त जरूर था पर लव जैसा उसके दिल में कुछ नहीं था।

इज़हार

इन्दर और मेघना की बॉन्ड़िग समय के साथ बढती गईं। जहाँ इन्दर एक तरफ इसे अपने दिल में प्यार का अंकुरण समझ रहा था, वहीं मेघना इसे दोस्ती का एक नया अध्याय समझ रही थी। एक दिन की बात है, इन्दर ने सोच लिया कि उसके दिल में अंकुरित इस प्रेम से वो मेघना को अनभिज्ञ नहीं रखेगा। वह चाहता था कि उसके ह्रदय में जो कुछ भी खामोशी से पल रहा हैं वो उसे अब शब्दों में तबदिल कर दे, पर हर बार मेघना की सहजता और सादगी उसके साहस को वापस लौटा देती। पर उस दिन उसने ठान लिया कि वह आज क्लास खत्म होने के बाद मेघना को अपने दिल की बात बता देगा।

क्लास खत्म हुईं। ''कुछ डाउट था, किसी क्वेंश्चन को लेके। हर बार की तरह इन्दर ने मेघना को क्लास के बाद रोक लेने का बहाना बनाया। सभी स्टूडेंट्स जा चुके थे। इन्दर और मेघना की खामोशी कक्षा कक्ष में गुंज रही थी। इन्दर हिम्मत करके मेघना के पास गया, उसकी हथेली अपने दोनों हाथो में ली और कुछ कह देने का साहस करने लगा।

मेघना ने कुछ नहीं कहा बल्कि वह इन्दर के हाथो का स्पर्श अपनी हथेलियों पर महसूस करने लगी। उसे पता था, यह स्पर्श जिस्मानी न होकर किसी वजह से हैं।

''मेघना''—इन्दर की आवाज में हल्की—सी थरथराहट थी।

वह रूकी—''हम्मम?''

कुछ पल खामोशी रही। पर मेघना के हाथों की पकड़ ने इन्दर को और मजबूती दी। अंततः हिम्मत करके इन्दर ने जैसे अपने भीतर की पूरी सच्चाई एक साँस में कह दी—

''मेघा, मैं तुम्हें हर रोज थोड़ा—थोड़ा जीता हूँ

जब तुम सामने होती हो, तो दिन आसान हो जाता हैं।

और जब नहीं होती, तो सब कुछ अधूरा लगने लगता हैं।

मेघा, मुझे नहीं पता क्या सही है या गलत?

पर मैं तुम्हें चाहने लगा हूँ।

(यह कहते इन्दर अपने अगूँठे का स्पर्श मेघा की हथेलियाँ पर करा रहा था। इन्दर के शब्दों से ज्यादा उस दिन इन्दर के हाथों के स्पर्श ने मेघा को बताया कि वो कितना चाहने लगा हैं।)

मेघा कुछ बोलती उससे पहले इन्दर ने आगे कहा–

''तुम मेरे लिए कोई पसंद नहीं हो तुम वो सुकून हो, जिसके बाद कुछ और चाहने का मन नही नहीं करता।''

पता है मेघा, **''तुम मेरे लिए दुनिया नहीं हो क्योंकि दुनिया में बहुत कुछ होता है–तुम वो हो, जिसके बाद मुझे किसी और दुनिया की जरूरत ही नहीं पड़ती।''**

मेघना ने इन्दर को देखा–लंबे समय तक। उसकी आँखों में हल्के मोती झलक पड़े, पर उसने खुद को समेट लिया।

'इन्दर'–मेघना की आवाज धीमी थी, पर स्पष्ट–''तुम बहुत सच्चे हो और शायद इसलिए यह कहना और मुश्किल हो रहा हैं। पर मेरे लिए अभी सिर्फ पढ़ाई महत्वपूर्ण हैं। मम्मी–पापा का भरोसा है और उसे **मैं किसी भी एहसास से ऊपर रखती हूँ।''**

इन्दर समझना मुझे। हमें फिलहाल अपने कैरियर पर ध्यान देना चाहिए और तुम ही तो कहते हो–तेरे लिए माँ–पा के सपनो से बढ़कर कुछ भी नहीं। तो मेघना कब से बीच में आने लगी इन्दर।

हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त हैं, इससे ज्यादा मैंने कभी नहीं सोचा। क्या हम दोस्त नहीं रह सकते?

उस पल इन्दर ने महसूस किया–**दिल टूटता नहीं, बस अपने ही भीतर धीरे–धीरे बैठ जाता हैं।**

इन्दर के हाथों का स्पर्श अब मेघा को नहीं हो रहा था। इन्दर ने मुस्कुराने की कोशिश के साथ कहा–''हाँ क्यों नहीं।''

मेघा ने इन्दर के दोनों गालो पर अपने हाथ रखे और एक प्यारा सा चुंबन का एहसास इन्दर को अपनी एक आँख के साइड़ में महसूस हुआ।

मेघा ने जल्दी करते हुए कहा—इन्दर मुझे आज थोड़ा मार्केट जाते हुए जाना है, सो मैं निकलती हूँ। नहीं तो लेट हो जाऊँगी और मम्मा की डाँट पड़ेगी।

इन्दर ने अपने सिर को हिलाते हुए कहा—हम्म।

मेघना ने बॉय कहा और निकल गई। पर इन्दर अब भी वहीं बैठा रहा—बिल्कुल खामोश। उसकी आँखों से हल्की अश्रुधारा निकल गई। जैसे उसने आज पता नहीं क्या खो दिया।

इन्दर भारी मन से वहाँ से उठा और रास्ते में हो रही घटनाओं से अनभिज्ञ रहते अपने कमरे की ओर बढता चला गया। शाम तक इन्दर का मन इतना भारी हो चुका था कि उसके लिए सहन कर पाना मुश्किल होता जा रहा था।

इन्दर ने शाम को सोनम (जो इन्दर और मेघना की कॉमन फ्रैंड़ थी) को फोन किया। सोनम जो हमेशा से बेबाक अंदाज रखती थी, फोन उठाते ही बोली—हैल्लललललो कैसे याद आ गई आज मेरी, इस वक्त।

इन्दर—सोनम, क्या हम मिल सकते हैं। अभी?

सोनम—बिल्कुल। आ जाओ रोज वाली जगह, वहीं पानी पतासी का अपना थैला।

इन्दर—10 मिनट में आया।

और इन्दर अगले पाँच मिनट में वहाँ पहुँच गया। **पत्ता नहीं पर—लड़कियों के बुलाने पर लड़के इतने जल्दी क्यों आते हैं।**

इन्दर और सोनम अक्सर शाम के वक्त उस थैले पर दुनियादारी की दो चार बातों के साथ साथ दो चार पानी पतासी गटक लेते थे।

सोनम—तो आज पानी पतासी इन्दर खिला रहा हैं या सोनम को खिलानी पड़ेगी।

इन्दर—मैं खिला दूँगा यार।

इन्दर और सोनम ने साथ में पानी पतासी खाईं। अब तक सोनम को उसके हाव भावों से समझ आ चुका था कि इन्दर आज किसी बात को लेके थोड़ा परेशान हैं।

टहलते—टहलते दोनों पास ही बने पार्क की एक बैंच पर जा बैठे।

सोनम—इन्दर। क्या बात है? कुछ परेशान से लग रहे हो।

इन्दर और सोनम की दोस्ती इतनी गहरी थी कि इतना कहते ही जिस इन्दर ने अब तक अपने आँसूओं को रोक रखा था, वो अब बह गए।

सोनम–इन्दर! हुआ क्या है?

इन्दर ने भावकुता के उन पलों में अपनी सारी कहानी बता दी।

सोनम ने माहौल को थोड़ा संभालने के लिए कहा–बस इतनी सी बात। यार। चलो मंदिर चलते हैं। मेरी जानकारी सीधे भगवान से हैं। उनसे माँग लेना–मेघना को। मिल जायेगी।

इन्दर तुरंत उठ खड़ा हुआ–चलो, चलते हैं मंदिर।

इन्दर और सोनम दोनों मंदिर गये। इन्दर मंदिर में भगवान के सामने शांत मुद्रा में हाथ जोड़ खड़ा हो गया। भगवान से इन्दर ने न धन माँगा, न सफलता और न कोई उपलब्धि वह बस एक नाम को अपने भीतर थामे खड़ा था–मेघना।

''भगवान ''–इन्दर ने बहुत धीमे मन ही मन कहा।

''मैनें आज तक आपसे कुछ नहीं माँगा बस आज एक चीज माँग रहा हूँ–बस उसे मेरी जिंदगी में रहने देना ''

उसकी आँखों से एक बूँद ढलकी–जिसे उसने पोंछा नहीं। वह कुछ पल और खड़ा रहा–फिर धीरे–धीरे आँखें खोलीं।

इस प्रार्थना के साथ इन्दर ने अपने प्रेम को सबसे पवित्र जगह पर रख दिया।

अगले दिन इन्दर फिर कोचिंग पहुँचा–सब वैसा ही था। हर रोज की तरह सामान्य। जैसे कुछ घटा ही न हो।

मेघना आई, बैठी और मुस्कुराई–''कल वाला टॉपिक रिवाइज कर लिया?''

इन्दर ने उसे देखा और उसी पल तय कर लिया कि वह अपने दर्द को, मेघना की सहजता पर कभी हावी नहीं होने देगा।

धीरे–धीरे, सब सामान्य हो गया। समय के साथ इन्दर का प्रेम और शांत हो गया था। जैसे उसने खुद को पीछे कर दिया हो और उसे आगे बढ़ते देखने में ही सुकून ढूँढ लिया हो।

मेघना के लिए इन्दर की परवाह समय के साथ बढ़ती गईं। कभी वह, जब मेघना कोचिंग नहीं आती–उसके लिए नोट्स बना के तैयार रखता। कभी बिना कहे उसकी थकान पहचान लेता कभी बस इतना पूछ लेता–''खाना खाया?''

जब कोचिंग का समय चेंज हो गया और मेघना सुबह जल्दी के चक्कर में खाना नहीं खाके आती तो इन्दर रोज उसे पोहे के थैले पर ले जाता और पोहे के साथ में उसे चाय पिलाता।

इन्दर का प्रेम मरा नहीं था, बल्कि वह उसे अलग तरीके से प्रकट कर रहा था। जब इंसान खुल के प्रेम को अभिव्यक्त नहीं कर पाता तो वह उसे परवाह, संगीत या डाट किसी ना किसी रूप में प्रकट करता हैं। इन्दर भी परवाह के रूप में अपने प्रेम की अभिव्यक्ति दे रहा था, परन्तु पूर्णतया निस्वार्थ भाव से।

मेघना अब भी सामान्य थी, पर अब कभी–कभी वह बिना वजह इन्दर को थोड़ा ज्यादा देर तक देख लेती थी।

एक शाम इन्दर को मेघना का कॉल आता है–इन्दर कहाँ हो? मेरे घर पर आ सकते हो क्या? कुछ डाउट्स थे। साथ में बैठ के पढेंगे तो क्लीयर हो जायेंगे।

इन्दर ने सिर्फ इतना कहा –''आ जाऊँगा।'' और अगले पाँच मिनट बाद इन्दर मेघना के घर पर था।

मेघना इन्दर के लिए चाय बना के लाई। दोनों सोफे पर बैठकर चाय की चुसकियाँ ले रहे थे। पर मेघना आज कुछ शांत सी थी। वह कई बार कुछ कहना चाहती–पर हर बार रूक जाती और इधर उधर की बाते करने लगती।

शाम ढल गई। इन्दर उठ खड़ा हुआ–चलता हूँ।

मेघना ने बस सिर हिलाया।

इन्दर दरवाजे के पास पहुँचा ही था कि मेघना सोफे से उठ खड़ी हुई और खुद को रोकना चाहते हुए भी नहीं रोक पाई। और दौड़ते हुए इन्दर को पीछे से हग कर लिया और अपनी पकड़ इतनी मजबूत बना ली जैसे वह कहना चाहती हो–अब यह पकड़ कभी नही छूटे।

वह स्पर्श अचानक था–पर उसमें महीनों की चुप्पी थी, जो अब शब्द बनना चाहती थी।

इन्दर ठहर गया। उसकी आँखें बंद हो गईं जैसे उसने इस पल को कई बार सोचा हो। उसने ऊपर की ओर देखा और ईश्वर को धन्यवाद दिया।

''मैंने बहुत कोशिश की '' (मेघना की आवाज टूट रही थी।) कि यह सब बस दोस्ती तक रहे। पर तुम्हारे प्यार के आगे मैं हार गईं। इन्दर कैसे कर लेते हो इतना निस्वार्थ प्रेम। कैसे हर पल महसूस करा देते हो, खुद को मेरे भीतर।

मेघना ने थोड़ा और कसकर इन्दर को थाम लिया और कहा—**"आई लव यू।"**

इन्दर जो अपनी जिंदगी के सबसे खुबसूरत इस पल को खामोशी से महसूस कर रहा था, धीरे से पलटा और कहा—पगली। तुमने अब महसूस किया हैं, मैं तो कब से सिर्फ तुम्हें ही जी रहा हूँ।

मेघना और इन्दर ने कसकर सामने से एक दूसरे को हग किया। इन्दर ने मेघा के ललाट को चुमा। मेघना की आँखों से आँसू निकल पड़े। पर आँखो से निकलते हुए उन आँसूओं को जमीं पर गिरने से पहले इन्दर ने अपने लबो पर पनाह दी।

अब तक जो प्रेम एकतरफा जाहिर था, आज दो तरफा हो गया। उस पल को देख के बस इतना समझ आया—**एक पसंदीदा स्त्री द्वारा अपने प्रेम के इजहार करने से अधिक सुंदर घटना इस दुनिया में है ही नहीं।**

मेघना के घर से निकलते ही इन्दर ने सोनम को कॉल किया—कहाँ हो? मिल सकते हैं? वहीं रोज वाली जगह। इन्दर सोनम को बताने के लिए इतना उतावला था कि आज फिर सोनम से पहले इन्दर पहुँच गया। जैसे ही सोनम आई, उसने एक ही साँस में अपनी सारी खुशी जाहिर कर दी।

इन्दर—सोनम। चलो कहीं चलते हैं।

सोनम—कहाँ?

इन्दर—वहीं मंदिर। जहाँ कुछ महीनों पहले मैंने माँगा और देखो ना आज मुझे मेरा चाँद मिल गया।

इन्दर सोनम को जल्दबाजी में खींच के मंदिर ले गया।

इन्दर ने आँखें बंद की और हाथ जोड़े। फिर हाथों को खोल खड़ा हो गया—जैसे भगवान का शुक्रिया अदा किया हो। जल्दी से पंडित जी के पास गया और आँखे बंद करके खड़ा हो गया। पंड़ित जी ने भी उसकी ललाट पर एक टीका लगा दिया।

सोनम पास ही खड़ी उसके हर पागलपन को देख रही थी। वह पुनः सोनम के पास आया और बोला—यार तेरी तो सच में भगवान से डायरेक्ट बात होती हैं। देखो ने आज उसने आगे से सब कुछ इजहार किया। इन्दर ने अपने ललाट पर लगा टिका दिखाते हुए बोला—**आज मेघना के नाम का टीका, भगवान को साक्षी मानते हुए लग गया। अब इन्दर मेघना का हुआ।**

सोनम ने चुटकी लेते हुए कहा–तुम कहो तो मांग भरवा दूँ, मेघना के नाम की।

इन्दर–नहीं। वो तो एक दिन मैं भरूँगा, अपनी मेघना की। और वो दिन मेरी जिंदगी का सबसे खूबसूरत दिन होगा।

इन्दर और सोनम की गोसिप के साथ रात गहराने लगी। दोनों ने आज बाहर ही खाना खाया। और अपने अपने रूम पर चले गये।

परवाह / शरारत / पागलपन

अगले दिन इन्दर कुछ जल्दी ही क्लास में पहुँच गया। जैसे ही मेघना दरवाजे से अंदर आई। इन्दर की आँखें धीमे से मुस्कुरा उठी–''लो, मेरी दुआ फिर से मेरे सामने आ गई ''। मेघना ने कुछ नहीं कहा बस अपनी जगह बैठते हुए हल्का सा इन्दर को देखा। **उस एक नजर में इन्दर ने पूरे दिन का सुकून पा लिया।**

अब इन्दर का प्यार और ज्यादा बढ़ गया। उसका प्यार शब्दों में नहीं, आदतों में दिखता था।

कोचिंग की वहीं भीड़, वही क्लास, वही नोट्स पर अब हर चीज में एक नर्मी घुल गईं। क्योंकि–

वहाँ अब वो था, जो दिल को समझता था

और वो थी, जो बिना कहे सब महसूस कर लेती थी।

केयर / परवाह

इन्दर की केयर बड़ी शोर शराबे वाली नहीं थी, वो तो ऐसे थी जैसे ठंड़ी हवा–महसूस होती हैं, पर दिखाई नहीं देती।

कभी जब मेघना की पेन चलना बंद हो जाती, तो बिना पूछे अपनी पेन उसकी तरफ सरका देता–**''तुम्हारी बातें अधूरी अच्छी नहीं लगती ''**

कभी वो चुप हो जाती, तो इंदर कुछ नहीं पूछता–बस उसके पास बैठकर धीरे से कह देता–

''तुम बोलो या ना बोलो, मैं सुन रहा हूँ ''। और इस एक लाइन में मेघना को अपना पूरा आसमान मिल जाता।

जब मेघना पढ़ते पढ़ते थक जाती, तो इंदर धीरे से उसकी किताब बंद कर देता और कहता–**''सपनों के पीछे भागना जरूरी है पर खुद को खो देना नहीं।''**

जब कभी मेघना उदास या थकी होती तो इन्दर खामोशी से उसके पास जाके बैठ जाता और कहता–**मेरा कंधा आपका इंतजार कर रहा हैं।** और मेघना उसकी बाजू को पकड़कर अपना सिर इन्दर के कंधे पर टिका देती।

इन्दर कभी उसके लिए सीट बचाकर रखता,

कभी भीड़ में उसे रास्ता देता,

कभी उसकी चुप्पी समझ लेता,

तो कभी उसकी मुस्कान के पीछे छुपी थकान।

उसका प्यार बड़ा नहीं था पर इतना सच्चा था कि मेघना को दुनिया की हर भीड़ में भी सुरक्षित महसूस होने लगा। इन्दर की केयर को देख मेघना को समझ आ चुका था कि–**''कुछ लोग हाथ नहीं पकड़ते, फिर भी पूरी जिंदगी संभाल लेते हैं।''**

शरारतें

इन्दर की शरारतें जैसे बचपन अब भी उसके अंदर जिंदा हो।

कभी किताब के बीच एक छोटी–सी पर्ची रख देता–**''आज तुम इतनी खूबसूरत लग रही हो कि पढ़ाई भी तुमसे जल रही है ''**।

कभी अचानक उसकी कॉपी खींच लेता–**''कभी हमें भी पढ़ लिया करो ''**

कभी इन्दर जानबूझकर गलत जवाब देता, सिर्फ इसलिए ताकि मेघना उसे टोके। और जब वो कहती–''इन्दर, तुम्हें इतना भी नहीं पता?'' तो इन्दर मुस्कुराकर जवाब देता–

''तुम्हारे मुँह से अपना नाम सुनने के लिए, थोड़ा बेवकूफ बन जाना भी जरूरी हैं।''

मेघना गुस्सा होने का नाटक करती–पर उसकी मुस्कान के आगे हर बार हार जाती। और सिर्फ अपनी नोटबुक इन्दर के सिर पर मारने के अलावा कुछ नहीं कर पाती।

इन्दर की हर शरारत में मेघना शामिल होती।

चाय पीते हुए–''इन्दर मेघना को निहारता रहता और कहता **''तुम होती हो तो ज्यादा अच्छी लगती हैं।''**

किताब खोलते हुए–''**हर पन्ने पर तुम ही याद आती हो।**''

इन्दर कि हर शरारत पर मेघना का दिल बोल उठता–

दुनिया में सबसे खूबसूरत शरारत वही होती है,

जिसमें किसी का दिल पूरी सच्चाई से शामिल हो।

पागलपन

इन्दर के प्यार में पागलपन भी था–कभी वह बच्चों की तरह, मेघना को उस मंदिर लेके जाता और पंडित जी को बताता कि यहीं है वो जिसे मैंने भगवान जी से माँगा और मुझे यह मिल गईं।

कभी वो क्लास के बाद उसी जगह बैठा रहता जहाँ मेघना बैठती थी। जैसे वहाँ अब भी उसकी मौजूदगी बाकी हो।

कभी हंसकर कहता–''अगर कभी तुम नहीं मिली ना, तो मैं इस कोचिंग को ही मंदिर बना दूँगा क्योंकि यहीं मैंने तुम्हें पाया हैं।

मेघना जब भी कहती **पागल हो तुम।** इन्दर का जवाब होता–**हाँ, तुम्हारे नाम का।**

गंगा घाट

इन्दर और मेघना का प्यार दिनों के बीतने के साथ ही मजबूती पकड़ता जा रहा था। कोचिंग की वह भीड़ भरी कक्षा जहाँ सैकड़ों सपने रोज अपने आकार तलाशते थे, वहीं दो नजरें भी थीं जो अक्सर एक–दूसरे को ढूँढ रही थी। दिन बीतते गए, समय पर कॉर्स खत्म हुआ। आर ए एस का प्रीलीम्स् अब पास ही था। किताबों के पन्नों के बीच, टेस्ट सीरीज के तनाव और भविष्य की अनिश्चितताओं के बीच उनका रिश्ता चुपचाप गहराता जा रहा था।

एक शाम, जब कोचिंग के बाहर हल्की बरखा बरस रही थी, मेघना ने अचानक कहा–

''इन्दर, जब प्रीलीम्स् हो जाए तो मैं कहीं दूर तुम्हारे साथ घुम आना चाहती हूँ।''

इन्दर ने हल्की मुस्कान के साथ पूछा–कहाँ?

मेघना ने थोड़ी देर चुप रहकर कहा–''गंगा घाट वहाँ जाकर बस कुछ देर शांति से बैठना है और शायद कुछ माँगना भी हैं।''

इन्दर ने मेघा की आँखों में झाँका–वहाँ एक अनकही उम्मीद थी।

''ठीक है, एग्जाम के बाद हम वहीं चलेंगे।''–इन्दर ने धीरे से कहा।

उस दिन के बाद दोनों ने उस वादे को अपने दिल में सहेज लिया। अब पढ़ाई के बीच भी एक छोटी–सी रोशनी थी–एक इंतजार था, जो उन्हें थकने नहीं देता था।

आखिर परीक्षा का दिन आ गया। पेपर हुआ। दोनों जल्द ही एक दूसरे के पास थे। दोनों की नजरें मिलीं–थकी हुई पर संतुष्ट। दोनों का पेपर अच्छा रहा।

मेघना ने हल्की मुस्कान के साथ कहा–चलें अपने वादे की ओर?

इन्दर ने बिना कुछ कहे सिर हिला दिया।

कुछ ही दिनों बाद, वे दोनों गंगा घाट की ओर जाने वाली ट्रेन में बैठे थे। खिड़की के बाहर भागते हुए दृश्य और अंदर उनके दिलों में उठती अनगिनत भावनाएं–उत्साह, संकोच और एक अनजाना सुकून। जब वे घाट पर पहुँचे, तो शाम ढल रही थी। गंगा का जल सुनहरी आभा में चमक रहा था। आरती की तैयारियाँ शुरू हो चुकी थीं, और वातावरण में भक्ति और शांति का अद्‌भुत संगम था।

मेघना ने धीरे से इन्दर का हाथ थाम लिया। इस स्पर्श के साथ मेघना ने कहा–

''यहीं मैं आना चाहती थी''।

मेघना ने हाथ जोड़े, आँखे बंद की और मन ही मन प्रार्थना की–कि यह रिश्ता उतना ही निर्मल रहे, जितनी पवित्र यह गंगा मैया हैं।

सांझ ढलने को थी। सांझ की सुनहरी रोशनी गंगा की लहरों पर ऐसे नाच रही थी जैसे किसी पुरानी कहानी का संगीत फिर से जीवित हो उठा हो। दोनों घाट पर जा बैठे। दशाश्वमेघ घाट पर बैठी मेघना (मेघा) ने हल्के दुपट्‌टे को संभाला और धीमे स्वर में कहा–''इंदर कभी–कभी लगता है हम दोनों किसी कहानी के दो पात्र हैं। तुम सामने बैठो, और मेरे भीतर कोई अनकही पंक्ति हिलोरें मारने लगती हैं।''

इंदर ने मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा। उस मुस्कान में अपनापन था, और कहीं बहुत भीतर एक गहरा विश्वास भी।

इंदर–''कहानी? अगर तुम पात्र हो मेघा, तो मैं तो बस तुम्हारी कथा का एक खुबसूरत विराम चिह्न बनना चाहता हूॅं–जिसके आगे तुम मुस्कुराओ, और जिसके बाद तुम कभी अकेली न रहो।''

मेघा की पलकें झुक गईं। **हवा हल्की थी, पर उसके दिल की धड़कने तेज।**

मेघना–''तुम्हें पता है, आज गंगा को देखकर ऐसा लग रहा है जैसे वह मुझे तुम्हारी आँखों का प्रतिबिंब लौटा रही हो शांत, गहरे, और थोड़ा सा बिन बोले समझाने वाले।''

इंदर–''और मुझे लगता है कि इस शहर की हर साँस तुम्हारे नाम की बनी हैं। मंदिरों की घण्टियों की ध्वनि हो या नावों की थपकियाँ–हर आवाज कहती है कि **तुम मेरी हो।''**

मेघा ने उसकी ओर देखा, जैसे किसी ने उसकी आत्मा को आवाज दी हो।

मेघना–''कभी डर लगता है इंदर प्यार जितना गहरा होता है न, उतना ही खोने का डर भी बढ़ता जाता हैं। क्या तुम भी डरते हो इन्दर? ''

इंदर–''हाँ, डरता हूँ। पर डर खोने का नहीं तुम्हें न पाने के डर से। **दुनिया चाहे जो कहे, लोग चाहे जितना समझाएँ, मेरे लिए तुम वही कविता हो जो बिना पढ़े भी याद रह जाती हैं।''**

मेघना–''काश कोई ऐसा क्षण हो जिसमें हम दोनों समय को रोक सकें। न कोई कल हो, न कोई कल का डर बस आप, मैं, गंगा की यह शांति और ठहरा सा हमारा वक्त।''

इंदर मेघना के थोड़ा और करीब आया।

इंदर–''अगर समय रूक जाए तो मैं सबसे पहले तुम्हारी इस मुस्कान को संभाल लूँगा कहीं खो न जाए। पता है मेघा, जब **तुम मुस्कुराती हो, तो लगता है शहर के अंधकार में कहीं एक दीपक जल गया–रोशनी बढ़ गईं हो।''**

मेघा की आँखे नम होने लगीं। शायद खुशी, शायद प्रेम, शायद दोनों।

मेघना–''तुम इतनी बातें कैसे कर लेते हो इंदर? तुम्हारे हर शब्द में जैसे कोई धड़कन छुपी रहती है ''

इंदर–''क्योंकि तुमसे जुड़ी हर बात दिल से निकलती है, दिमाग से नहीं। तुम्हारी मौजूदगी ही मेरे भीतर इतनी भावनाएँ जगाती है कि खुद को भी पहचान नहीं पाता।'' **मेरे शब्दों से ज्यादा उन शब्दों की प्रेरणा मेरी मेघना प्यारी है मेघा।''**

मेघना ने कंधे पर सिर टिकाते हुए कहा–'' अगर एक दिन मैं थक जाऊॅ, टूट जाऊँ, तो क्या तुम मेरा सहारा बनोगे?''

इंदर ने बिना हिचक के कहा–''मेरी मेघा यदि कभी टूटी तो उसको शब्दों से जोड़ दूँगा। **तुम कभी थकोगी तो मैं तुम्हें अपनी बाँहों में विश्राम दूँगा। और अगर कभी आँसू आए तो वह मेरी लबों को चुमेंगे जमीन को नहीं।**''

मेघना–तुम्हारे साथ बहुत सुरक्षित महसूस करती हूँ इंदर। ऐसे लगता है दुनिया कितनी भी कठोर हो तुम मेरी जिंदगी को मुलायम बना के रखोगे।

इंदर–''शायद इसी को प्यार कहते है मेघा–जब दो लोग एक दूसरे के लिए दुनिया का मौसम बदल दें। **तुम हो तो मेरे भीतर का हर अँधेरा उजला हो जाता हैं।''**

गंगा की लहरें धीरे धीरे किनारे से टकरा रही थी। उनकी आवाज किसी पुराने गीत की धुन जैसी थी। मेघा ने सिर इंदर के कंधे पर टिका रखा था।

मेघना (धीरे से)–''इंदर वादा करो, ये कहानी कभी अधूरी नहीं रहेगी।''

इंदर–''मेघा **हम दोनों मिलकर इस कहानी को इतना सुंदर लिखेंगे कि वक्त भी इसे पढ़कर मुस्कुराए।''**

गंगा के ऊपर से उड़ते पक्षियों की परछाइयाँ दोनों के ऊपर गिर रही थीं, और सूर्य अस्त होते होते मानों उनके प्रेम को आशीर्वाद दे रहा था।

उस क्षण दोनो को लगा–**घाट पर बैठे यह दो दिल, अब सिर्फ बातचीत नहीं कर रहे वे अपनी साझा नियति लिख रहे हैं।**

मोटिवेशन, प्रेम व स्मृति वन

गंगा घाट से लौट आने के बाद एक बार फिर मेघना और इन्दर अपनी उसी किताबी दुनिया में लौट आये। अब उन्हें आर ए एस मैंन्स की तैयारी करनी थी, ताकि दोनों अपने अपने सपनों को उड़ान दे सके। इन्दर के लिए एग्जाम निकालना न केवल अपने सपनो को उड़ान देना था, बल्कि **हर रोज अपने पिता की झुकी कमर और माँ के फटे आँचल का हिसाब देना था।**

जब खेत में खड़ी फसल ओलों से बर्बाद होती, तो इन्दर अपने पिता से यह सुन किताबों के पन्नों में और ज्यादा झुक जाता। क्योंकि इन्दर जानता था कि समय रहते समय का उचित उपयोग ना हो तो–

गरीबी केवल जेब की हालत ही नहीं, कई बार वह सपनों की आवाज भी दबा देती हैं।

जब दोस्त त्योहारों में घर जाते, तो इन्दर कमरे की दीवारों के बीच अकेला पढ़ता रहता। क्योंकि उसे याद था कि–**उसकी माँ ने आखिरी बार भी नई साड़ी की जगह उसकी फीस चुनी थी।**

इन्दर के कमरे की दीवार पर चिपकाई गई सबसे तीन खूबसूरत लाइनें थी–

01. इंसान गरीब पैदा होता है, यह उसकी गलती नहीं हैं, परन्तु गरीबी में मर जाये यह उसकी गलती हैं।
02. पिता का सिर पर हाथ होना, इससे बड़ा कोई आशीर्वाद नहीं और माँ के ममत्व से बढ़कर कोई प्रेम नहीं।
03. वर्तमान दौर में गरीबी से बाहर निकालने का सबसे प्रभावी हथियार शिक्षा हैं।

यह लाइनें सिर्फ लिखी और पढ़ी ही नहीं गई थी बल्कि इन्दर ने इन्हें अपने जीवन में आत्मसात् कर रखा था। इन्दर किसी भी कीमत पर अपने और अपने माँ–पा के सपनों को धूमिल नहीं कर सकता था। किसी भी **एग्जाम को क्रैक करने के लिए जितना जरूरी पढ़ना है, उतना ही जरूरी हैं, अपनी परिस्थितियों से मोटिवेट होना।** दूसरों द्वारा दिया मोटिवेशन दिन–दो दिन का हो सकता

हैं। परन्तु ग्रामीण परिवेश से निकले एक विद्यार्थी की उसकी अपनी परिस्थितियों द्वारा दिया मोटिवेशन सफलता की अंतिम सीढी तक का होता हैं।

मेघना भी इन्दर की परिस्थितियों से पूर्णतया परिचित थी। हालांकि इन्दर कभी अपनी कमी जाहिर नहीं करता पर मेघना का प्रेम अक्सर वो सुन लेता था जो शब्दों में कहा ही नहीं जा सकता।

इसलिए तो मेघना बातों बातों में इन्दर से सब जान लेती—कब कौनसी किताब इन्दर के पास नहीं हैं। और कुछ दिनों बाद, वही किताब अचानक उसके हाथों में होती। मेघना हर बार अलग बहाना तैयारी रखती—बुक मार्केट गईं थी, तो सोचा दो ले आँऊ, तू कौनसा मुझसे अलग हैं। कभी गिफ्ट के नाम पर इन्दर को किताब भेंट कर देती तो कभी किसी बहाने। पर मेघना ने कभी उसकी मदद को एहसान नहीं बनने दिया क्योंकि उसे पता था—**स्वाभिमान गरीब आदमी की एकमात्र दौलत होती हैं।**

प्रेम में भी मेघना ने इन्दर को कभी खर्चों के बोझ तले नहीं झुकने दिया। जब भी दोनों कहीं चाय पीने जाते, मेघना हँसते हुए पहले ही पैसे दे देती और कहती—''अरे आज मेरी तरफ से अगली बार तुम देना।'' और इन्दर जानता था कि वो ''अगली बार'' शायद कभी आने ही नहीं देगी।

घुमने जाना हो,

नोटबुक खरीदनी हो,

या अचानक भूख लग जाने पर छोटी सी दुकान पर रूकना—हर बार मेघना बड़ी चुपके से सब संभाल लेती। इतने प्यार से कि इन्दर की आत्मा को भी इसका बोझ महसूस नहीं होने देती।

कई बार इन्दर मना करता, तो वो नाराज हो जाती और कहती—**''प्यार हिसाब नहीं माँगता इन्दर''।** तुमने तो आज मुझे पराया बना दिया। और मैं कौनसा पूरी लाइफ तुझे इतना ही प्यार करूँगी, शादी बाद तो वैसे भी मेरे नखरे और खर्चें दोनों तुझे उठाने हैं। अभी तो मुझे उठा लेने दें। और इन्दर उसकी नाराजगी के आगे हर बार हार जाता।

मेघना के प्यार को देख लगता था—

एक पुरूष की मजबूरियों को कौसना प्रेम नहीं, बल्कि उन परिस्थितियों में उसके साथ खड़ा रहना ही प्रेम हैं।

एक स्त्री का किसी पुरूष की रानी बनना महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि महत्वपूर्ण हैं–पुरूष के राजा बनने के सफर में उसके साथ बने रहना।

मेघना इन्दर के अपने साम्राज्य बनाने में बेखूबी साथ निभा रही थी। इसी बीच एक बार फिर आन्सर राइटिंग, पेपर और पढ़ाई का दौर शुरू हुआ। दोनों की पढ़ाई और प्यार दोनों साथ साथ चलते रहे। ना कभी स्टेड़ी पर प्यार हावी रहा, ना प्यार पर स्टेड़ी। बल्कि दोनों ने मिलकर एक ऐसा समन्वय बना रखा था कि प्यार स्टेड़ी में बोझ न होकर सहायक बन गया। एग्जाम से पहले वो दोनों एग्जाम के लिए पढ़ते और एग्जाम बाद दोनों समय निकाल एक दूसरे को पढ़ते।

आज कक्षा कक्ष एग्जाम देने के बाद मेघना ने इन्दर को कहा। इन्दर सुनो ना–स्मृति वन चलना हैं। और इन्दर हमेशा की तरह तैयार ही था। दोनों स्मृति वन जा पहुँचे। वन में एक पेड़ की छाँव के नीचे मेघना की गोद में सिर रख इन्दर आज मेघना के सौन्दर्य का वर्णन अपने शब्दों में यू कर रहा था जैसे **प्रशंसा का हर शब्द उसके हृदय से जन्म लेकर होठों तक आ रहा हो।**

इन्दर–मेघना पता है मुझे तुम सुंदर इसलिए नहीं लगती कि तुम सजी हुई हो बल्कि तुम सुंदर हो क्योंकि तुम मेरे जीवन का सुकून हो और जीवन भर की शांति भी।

जब आप मुस्कुराते हो तो लगता है जैसे जीवन ने अपनी सारी थकान उतार दी हो।

तुम्हारे चेहरे की शांति मुझे यह यकीन दिलाती है कि हर उलझन के बाद एक सुकून भरा ठहराव भी होता हैं।

तुम्हारी आँखे कम बोलती हैं पर जो वो कहती हैं वो दुनिया की किसी भी आवाज से ज्यादा साफ होता हैं।

मेघना ने चुटकी लेते हुए कहा–शायर साहब! पर खुद के सुकून की तारीफ करोगे या कुछ मेरे नयन नक्स पर भी शब्द कहे जा सकते हैं?

इन्दर–अच्छा फिर सुनो–**आपके चेहरे का सौंदर्य शोर नहीं करता, वह मौन में ठहरकर मेरे मन को छूता हैं।**

तेरी यह हल्की सी झुकी ठोड़ी और होठों पर ठहरी यह संयमित मुस्कान मानो किसी सधे हुए आत्मविश्वास का संकेत हैं।

लहराते खुले बाल जो न अभी बिखरे हुए है न बंधे –यह **उसी तरह स्वतंत्र है जैसे आपका अपना व्यक्तित्व,** जो सहज है, सधा हैं।

यह सुंदरता सजावट की मोहताज नहीं यह तो आत्मा से होकर चेहरे तक आई हुई शांति है–जिसे देखा नहीं जाता, महसूस किया जाता हैं।

मेघना–इन्दर तुम्हारी बातों से डरने लगी हूँ। ऐसे लगता हैं जैसे तुमने सब कुछ मुझे मान रखा हैं।

इन्दर–मेघा। **तुम्हारा साथ किसी दिखावे की तरह नहीं, बल्कि आदत की तरह हैं**– जिसके बिना जीवन अधूरा सा लगता हैं। और क्यों ना मैं आपको अपना सब कुछ ना मानूँ। **मेरा हृदय मेरी माँ के बाद सिर्फ आपको समर्पित हैं**, यार।

मेघना की आँखो में थोड़ी सी नम हो गई–शायद खुशी, शायद डर।

मेघना ने इन्दर के ललाट को चुमते हुए कहा–इन्दर मैं जानती हूँ, मैं तुम्हारा सुकून हूँ और मेरा सौभाग्य रहेगा कि मैं जिंदगी भर तुम्हारा सुकून, खुशी, और ठहराव बनकर रह सकूँ। इस मेघना का जीवन अब इस इन्दर को समर्पित हैं। यह मेघना इन्दर के लिए जीयेगी–इन्दर।

इन्दर–नहीं मेघा। तुम्हारा खुद का अपना अस्तित्व है और मैं उस पर कभी अतिक्रमण नहीं करना चाहता।

मेघना–इन्दर। तुमने मेरे हृदय पर अतिक्रमण नहीं, बल्कि मेरे हृदय को जीता हैं। **मेरे हृदय को जीतने वाले बाल गोपाल के बाद तुम दूसरे विजेता हो।**

इन्दर–अच्छा जी।

स्मृति वन की शाम आज उन दोनों की उपस्थिति से कुछ अलग ही थी। डूबते सूरज की सूनहरी रोशनी पेड़ों की शाखों से छनकर जमीन पर बिखर रही थी। हवा में मिट्टी और पत्तो की मिली जूली खुशबू थी, जैसे प्रकृति स्वयं उनकी अनकही कहानी को सुन रही हो। इन्दर और मेघना खड़े हुए और अब पगडंड़ी पर चल पड़े। न वापस लौटने की कोई जल्दबाजी, न कोई शोर, बस दो दिल, जो एक दूसरे के साथ होने भर से पूर्ण लग रहे थे।

चलते–चलते मेघना एक छोटे खाली स्थान पर रूक गईं। वहाँ पास ही कुछ नए पौधे रखे थे, जिन्हें लोग अपनी यादों के नाम लगा रहे थे।

मेघना ने मुस्कुराकर कहा–''इन्दर, लोग तस्वीरें लगाते है, नाम लिखते है पर वो सब समय के साथ धुंधला जाता हैं। क्यों ना हम अपने प्यार के नाम एक पेड़ लगा दें? ताकि **हमारा प्रेम सिर्फ शब्दों में नहीं, साँसों में जिए।''**

इन्दर कब मेघना को किसी चीज के लिए मना कर पाया। वह मेघना को उस पल देखता रहा। उसकी आँखों में उस समय कोई लड़की नहीं, पूरा भविष्य खड़ा था।

वो हल्का सा मुस्कुराया और बोला–क्यों नहीं। ''तस्वीरें दीवारों पर टंगी रहती है पर पेड़ धरती में जड़ें बनाकर जीते हैं। **अगर हमारा प्रेम सच्चा है तो इसे भी जड़ें मिलनी चाहिए।''**

दोनों ने मिलकर एक छोटा सा पौधा मिट्टी में लगाया। मेघना अपने हाथों से मिट्टी ठीक कर रही थी और इन्दर उसके चेहरे पर आते हुए बाल। **उस क्षण उन्हें एहसास हो गया था कि प्रेम केवल साथ चलने का नाम नहीं, बल्कि किसी चीज को मिलकर साथ सींचने का नाम भी हैं।**

पौधा लगाने के बाद मेघना ने धीमे से कहा–''जब यह पेड़ बड़ा होगा ना तब शायद हम भी जिंदगी में बहुत आगे निकल चुके होंगे। हमारी शादी हो चुकी होगी।'' और मैं शादी बाद इसी पेड़ की छाँव में तेरी गोद में सो कर मेरे लिए तेरी लिखी कविता सुनूँगी। इन्दर तुम लिखोगे ना मेरे लिए एक प्यारी सी कविता?

इन्दर–बस इतनी सी बात। चलो आज रात यहीं काम करता हूँ। अपने शब्दों में आज इन्दर मेघना को लिखेगा। और एक नहीं बहुत बार।

इसी वादे के साथ ***मेघना अपने घर को इन्दर का एहसास लेके और इन्दर अपने रूम पर मेघना की रूह के साथ लौट जाता हैं।***

इन्दर अगले दिन कोचिंग में दो क्लास के बाद मेघना की बालों की लट को अपनी अगुँली पर लपटते हुए कहा–चलो ना। चाय पीके आते हैं।

मेघना–नहीं। किसी ने कल का वादा अभी तक पूरा नहीं किया।

इन्दर–बस इतनी सी बात।

मेघना–हाँ। अब तो वादा पूरा करने के बाद ही चाय पीने जाऊँगी।

इन्दर ने मेघा के हाथों में अपनी हथेली ऐसे रखी जैसे इन्दर ने अपने स्पर्श से मेघा की रूह को छू लिया हो। फिर बोला–सुनो फिर।

मेघना—सुनाओ भी।

इन्दर—और इन्दर अपनी लिखी कविता गुनगुाने लगा —

यह बारिश का मौसम और यह तुम्हारी याद।
चलो एक कप चाय पीते हैं, बैठ के एक साथ।।

खो के एक दूसरे में होगी प्यार की शुरूआत।
बरसती रहेगी बरखा, और होगी उसमें प्यारी भरी एक मुलाकात।।

मैं तुम्हें देखूं, और तुम मुझे, और देखे दोनों नशीले ख्वाब।
उलझ के तेरी इन जुल्फों में, करे प्यार भरी बात।।

पढ़ूं तुझको मैं, तुझमें ही डूब के, लगती हो खुली सी किताब।
और तुम हाथ घुमा के बोले, कहाँ खो गये जनाब।।

मृगनयनी, कामाक्षी, मीनाक्षी, हंसगामिनी क्या—क्या बोलू तूझे, ऐसा है तेरा शवाब।
लम्बा सा रास्ता हो, और चले तू और मैं डाले हाथों में हाथ।।

चलते—चलते खो दे दोनों जज्बात।
एक बार फिर हो वहीं मूसलाधार बरसात।।

तू मुझे लगे मुमताज सी, और मैं बनूं तेरा नवाब।
बारिश का पता नहीं पर ऐसे सपने आये मुझे हर रात।।

चलो बैठ के पीते के एक कप चाय का साथ।
फिर खो जाये दोनों हमेशा के लिए डाले हाथों में हाथ।।

मेघना—इन्दर! तुन्हें यह कब सीख लिया यार। कितना अच्छा लिख लेता हैं तू। अब तो हर रोज तूझसे सुनूँगी।

इन्दर—जी। सून लेना। यह इन्दर लिखेगा भी तो सिर्फ तुम्हारे लिए। पर चलो अभी दोनों चाय पीने चलते हैं।

इन्दर और मेघना एक दूसरे में खोये चाय पीने चले जाते हैं।

फाइनल एग्जाम

आर ए एस फाइनल के एग्जाम की डेट का चुकी थी। अब परीक्षा कुछ ही दिनों दूर थी। जयपुर की हवा में अब सपनों से ज्यादा बेचैनी घुल गई थी। कमरों की लाइटें रात रात भर जलती थीं और हर चेहरे पर भविष्य का भार साफ दिखाई दे रहा था।

पर इन्दर और मेघना के बीच इस तनाव के समय में भी एक अजीब सी शांति थी। अब दोनों ने प्रेम को शब्दों से निकालकर एक दूसरे की जिम्मेदारी बना लिया। अब उनके बीच ''आई लव यू'' कम बोला जाता था पर–

''खाना खा लेना समय से ''

''आज ज्यादा देर मत जागना''

''रिवीजन पूरा कर लेना समय से''

यही उनके प्रेम का नया रूप था। हर छोटी छोटी बात में उनका पूरा प्रेम बसने लगा था। लाइब्रेरी के अलग अलग कोनों में बैठकर वे घंटों पढ़ते रहते। कभी कभी केवल नजरें मिलतीं और वहीं नजरें एक दूसरे को को यह भरोसा दे जाती कि–**''थकना मत मैं यहीं हूँ।''**

एक दिन इन्दर ने नोटिस किया कि मेघना लगातार एक ही पेज को पढ़े जा रही हैं। उसकी उंगलियाँ किताब पर थी, पर आँखों में नींद उतर आई थी। इन्दर धीरे से उसके पास गया, बिना कुछ कहे इन्दर ने मेघना की किताब बंद कर दी। मेघना चौंककर बोली–''क्या कर रहे हो? बहुत सैलेबस बाकी हैं।''

इन्दर मुस्कुराया। फिर बहुत धीमी आवाज में बोला–**''सपनों को पाने के लिए खुद को खो देना जरूरी नहीं होता।'' वैसे भी थका हुआ मन मंजिल तक नहीं पहुँच पाता।**

इन्दर नीचे गया और दो कप चाय ले आया। दोनों ने प्यारी भरी चुसकियाँ ली और फिर पढ़ने बैठ गये। इन्दर की केयर देख मेघना समझ चुकी थी कि–कुछ लोग प्रेम में बड़ें वादे नहीं करते बस खामोशी से केयर करते हैं।

कभी जब इन्दर किताब खोलता, उसके सामने केवल प्रश्न नहीं होते थे। **उसे अपने पिता के फटे हुए हाथ और माँ की पुरानी साड़ी दिखती थीं। उसे वह टूटी छत याद आती जहाँ बरसात में बाल्टियाँ रखनी पड़ती हैं।** एक दिन जब कोचिंग में लिए पेपर में नम्बर कम आये तो इन्दर थोड़ा टूट सा गया। वह कोचिंग से निकलकर सीधे कमरे में चला गया। मेघना समझ गई थी कि वह अंदर से बिखर चुका हैं।

वो पीछे पीछे उसके कमरे के बाहर जा पहुँची। हाथ में बस एक डायरी थी। जिसे इन्दर की तरफ बढ़ाते हुए कहा ' ''जब डर लगे ना तो इसमें अपने सपने लिख देना। इन्दर ने डायरी खोली। पहले पेज पर मेघना का लिखा था–

हारना मत क्योंकि तुम उस पिता की उम्मीद हो, जिसने अपनी जरूरतें मारकर तुम्हारे सपनों को जिंदा रखा हैं।

इन्दर की आँखे भर आई। वह मेघना को देखता रहा। उसे लगा जैसे यह लड़की प्रेम ही नहीं करती बल्कि उसके टूटे हुए हिस्सों को हर दिन जोड़ती हैं।

एग्जाम के एक दिन पहले की रात इन्दर और मेघना दोनों कुछ देर तक एक साथ बैठे थे। मेघना ने अपना सिर इन्दर के कंधे पर टिकाते हुए कहा–इन्दर ''डर लग रहा हैं।''

इन्दर ने धीमे से कहा–तुम्हें कोई एक चीज माँगने के लिए कहा जाये तो तुम क्या माँगोगे?

मेघना–इन्दर। तुम्हें और क्या ही माँगूगी।

इन्दर–तो इन्दर तो हर पल तेरे साथ हैं। तो किस बात का डर?

मेघना की आँखों में थोड़ी नमी थी, उसने इन्दर की बाजू को कस के पकड़ते हुए कहा–इन्दर! हम हमेशा साथ रहेंगे ना पक्का।

इन्दर–मेघा हमेशा। जब तक इन्दर रहेगा, मेघा के साथ रहेगा। तेरे बिन जी भी तो नहीं पाऊँगा यार।

मेघना–इन्दर यदि मैं कहूँ अपने प्यार के लिए एक बेहतरीन लाइन बताओ तो वो क्या होगी?

इन्दर–मैं तेरा, तू मेरी।

इन्दर और मेघा का डर अब प्यार भरी बातों में तबदील हो गया। तय समय पर एग्जाम हुए। इन्दर और मेघना दोनों के पेपर अच्छे गए।

बर्थ–डे स्पेशल

मैंन्स् की परीक्षा समाप्त हुए कुछ दिन बीत चुके थे। महीनों से थके हुए मन अब पहली बार चैन की साँस ले रहे थे। रिजल्ट का इंतजार था, इसी बीच इन्दर की जिंदगी की सबसे यादगार शाम उसके दरवाजे पर दस्तक देती हैं।

उस दिन इन्दर का जन्मदिन था। शाम ढल रही थी तभी मेघना का फोन आया।

मेघना–आज 7 00 बजे होटल कृष्णा आ जाना। रूम न–102।

इन्दर कुछ बोलता उससे पहले फोन कट चुका था। स्क्रीन पर एक मैसेज था, प्लीज जल्दी आ जाना। लोकेशन शेयर कर रही हूँ।

इन्दर पूरे रास्ते भर सोचता गया। जैसे ही उसने रूम न 102 मे दस्तक थी, वह कुछ क्षणों के लिए बिल्कुल स्थिर रह गया।

कमरे में हल्की पीली रोशनी थी। गुलाब की पंखुड़ियाँ बिखरी थीं। बेड के बीचों बीच सजा हुआ एक केक और पास में ही हल्की जलती एक मोमबत्ती।

लाल रंग के दुल्हन के परिधान में सजी हुई मेघना, मांग के पास से निकलती बालों की एक घुँघराली लट जो साँप सी बल खाती हुई गालों तक उतर आई थी, उसके कानों में झूलते झूमके, कलाईयों में सजी लाल चूड़ियाँ, होंठो पर हल्की मुस्कान, पलकों पर थोड़ी शर्म, नाक की छोटी सी नथ, महेंदी सजे हाथ और ललाट पर लगी बिंदी सब ऐसे लग रहे थे जैसे मानो सांझ ने खुद अपने हाथों से इन्दर के स्वप्न को साकार रूप दिया हो।

इन्दर धीरे से मेघना से पास गया और भावुक होकर उसे कसकर हग कर लिया। उस समय मानो समय थम सा गया हो। इन्दर ने मेघना को बस वैसे ही थामे रखा– बिल्कुल शांत। मेघना अपना मुँह इन्दर के कान के पास ले गई और धीमे से प्यार से बोला–हैप्पी बर्थ–डे, मेरी रूह। इन्दर की आँखों में हल्की नमी उतर आई। इन्दर बस इतना कह पाया–मेघा आई लव यू।

मेघना ने भी रिप्लाई किया–आई लव यू टू।

मेघना–चलो इन्दर अब केक काट लेते हैं।

मेघना ने इन्दर का पसंदीदा हल्का म्यूजिक लगाया और दोनों ने मिलकर केक काटा। इन्दर ने केक का छोटा सा टुकड़ा मेघना को खिलाया, मेघना ने इन्दर को। दोनों ने एक दूसरे के माथे को चुमा। एक हल्का सोफ्ट् सा लिप किस हुआ।

मेघना–इन्दर आँखे बंद करो। जैसे ही इन्दर ने आँखे बंद की। मेघना ने अपने पास रखी छोटी सी डिब्बी इंदर के हाथों में थमा दी।

इन्दर ने खोला–उसमें सिंदूर था। उस क्षण कमरे की हवा जैसे थम गई। मेघना की आँखें झुक गईं। वह धीमे से बोली–**''प्रेम अगर सच्चा हो तो उस रिश्ते को किसी नाम की नहीं, बस एक स्वीकार की जरूरत होती हैं।''** मैं इन्दर को दिल से स्वीकार कर चुकी, क्या इन्दर भी इस मेघना को स्वीकार करेगा?

इन्दर ने बहुत धीरे से मेघना की मांग में सिंदूर भरते हुए उसके ललाट को चूम लिया। मेघना की आँखों से खुशी के आँसू बह गये। उसने इन्दर की बाजू को हग किया, और बेड–रेस्ट का सहारा लेके दोनो काफी देर तक चुपचाप एक दूसरे को निहारते हुए बैठे रहे।

मेघना ने इन्दर की अंगुलियों में अपनी अंगुलियाँ डाली–इन्दर वादा करो, जिंदगी में हालात जो भी हो, तुम खुद को नहीं बदलोगे।

इन्दर शांत आवाज में बोला–**''जिस लड़की ने सबसे बुरे दिनों में मेरा साथ दिया हैं, मेरे सबसे अच्छे दिनों की हकदार भी वहीं होगी। वैसे भी तुम सिर्फ प्रेम ही नहीं, मेरे प्राण भी हो प्रिय।**

मेघना ने मजाकिया अंदाज में कहा–कहीं तुम बड़े आदमी बन गए तो बदल तो नहीं जाओगे?

इन्दर–**संघर्ष में साथ देने वाली स्त्री के सामने आदमी बड़ा नहीं, बस विनम्र बनता हैं। मेघा मैं कभी बड़ा या छोटा नहीं बल्कि तेरे लिए मैं सिर्फ तेरा आदमी बनके रहूँगा।**

मेघना की आँखे एक बार फिर नम हो गईं। उसने धीरे से कहा–''मुझे तुमसे कोई महल नहीं चाहिए इन्दर बस जिंदगी के हर मुश्किल दिन में तुम्हारा साथ चाहिए।''

इन्दर मेघना की हथेली में अपने अगूँठे का स्पर्श महसूस कराते हुए बोला–इन्दर, यदि इसी जहां में रहा तो सिर्फ मेघा का रहेगा। मेघना के सिवा इन्दर पर

किसी का हक नहीं होगा। मेघा वादा करो–जैसे इन्दर मेघना का साथ देगा, वैसे ही तुम मेरा हाथ नहीं छोड़ोगी।

मेघना तुरंत अपना हाथ उसकी उंगलियों में फँसा के बोली–''मरते दम तक नहीं ''।

तभी कमरे की बेल बजती हैं। वैटर मेघना द्वारा पहले से ऑर्डर किया हुआ खाना ले आता हैं। मेघना ने वैटर को केक पकड़ाया साथ में 500 रूपये की टिप।

मेघना इन्दर की गोद में बैठ जाती है और हर एक निवाला इन्दर के हाथों से खाती हैं। हर निवाले के साथ सब्जी लगे लिपस् से इन्दर के गालों पर किस करती हैं।

खाना खत्म करके दोनों एक बार फिर एक दूसरे को हग करके बैठ गए।

मेघना–मैं तुम्हें कैसी लगती हूँ? (प्रेम इस सवाल के बिना अधूरा रहता हैं। हर प्रेमिका ने अपने प्रेमी से कभी ना कभी यह सवाल जरूर पूछा होगा।)

इन्दर–सुनो फिर।

सुनो जिसे मैं पढ़ता जाऊं, वो किताब हो तुम।
मेरा पसंदीदा रंग दा गुलाब हो तुम।
जिस ख्वाब के, मैं ख्वाब बुनता जाऊं
उतना प्यारा सा ख्वाब हो तुम।। 01।।

मुझे मां के बाद बख्सी खुदा की सबसे बड़ी इबादत हो तुम।
मुझ जैसे शरारती की शरारत हो तुम।
जो हरगिज ना छोड़ी जायें
वो आदत हो तुम।। 02।।

तुम वो हो, जिससे मैं कितनी बातें कर लूँ बोर नहीं होता।
तुम जब साथ हो तो मैं ख्यालों में नहीं खोता।
जिस दिन तुम देख लो एक नजर भर मुझे
उस रात मैं सारी रात नहीं सोता।। 03।।

तुम कैसी हो बताऊ तुम्हें, तुम डूबते इस तिनके का सहारा हो।
आके दिल सिर्फ तुम पर धड़कता, चाहे दिल कितना अंवारा हो।

आंख मूँद के भी महसूस कर सकता हूँ तुम्हें
ऐसा कोहिनूर तुम हमारा हो।। 04।।

अभी बहुत नादान हो तुम।
तुम मेरे लिए क्या हो इस बात से भी अनजान हो तुम।
छिपी उदासी की शाम बीच एक मुस्कान हो तुम।
तलाशता रहता था अक्सर मैं सुकून को
एक लाइन मैं सुन लो–उसी सुकून की खान हो तुम।
सुनो इन्दर की जान हो तुम।।

मेघना–इन्दरररररररर। वाओ। कितना प्यारा लिखता हैं, तू। सुनो एक और प्लीज।

इन्दर–

तू इतनी खूबसूरत है, तुझसें नजरें कैसे हटाऊं मैं।
नहीं रहा जाता तेरे बिन, तुझे कैसे बताऊं मैं।

मन करता हैं बार बार सीने से तुझे, लगाऊं मैं।
हर वक्त तेरे कोमल हाथों से खाना खाऊं मैं।

तेरी एक झलक ही काफी हैं, उसमें खो जाऊं मैं।
तू आ पास मेरे, तेरी गोद में सो जाऊं मैं।

मानता ही नहीं, बता ना कैसें दिल को समझाऊं मैं।
अबकी बार मेरी बारी, तेरे बालों में अंगुलियां घुमाऊं मैं।

तेरे कंधे पर सर रख खुद को सुकून दिलाऊं मैं।
तेरे गालों पर हाथ रख, तुझसे ही नजरें मिलाऊं मैं।

एक तू ही हैं, तेरे संग बेफ्रिकरा खिलखिलाऊं मैं।
ख्वाब आखों का हमेशा के लिए–तेरा हो जाऊं मैं।

बहुत कोशिश की कट्रोल की बट नहीं होता कैसे समझाऊं मैं।
तेरे संग सब कुछ, तेरे बिन मर जाऊं मैं।

मेघना–यार इन्दर। तू तो बहुत बड़ा शायर हो गया।

इन्दर—मैं कहाँ ही शायर। इन पोइम्स के पीछे छुपी खुबसूरती तो तुमसें हैं मेघना।

मेघना ने आँखें बंद की और अपने लिप्स इन्दर के लिप्स पर टिका दिये। रात और गहरी होती गईं। दोनों एक दूसरे के और करीब आते गए। दो लोग जो लंबे संघर्ष के बाद पहली बार पूरी तरह सुरक्षित महसूस कर रहे थे। इन्दर का हाथ अब ब्रा की स्ट्रैप्स पर था। जैसे जैसे स्ट्रैप्स को इन्दर ने नीचे उतारा वैसे वैसे मेघना की नजरें झुकती चली गईं।

उस रात उनके बीच केवल शरीरों की दूरी नहीं मिट रही थी बल्कि दो अधूरे जीवन एक दूसरे में अपना घर ढूँढ रहे थे।

जैसे इन्दर मेघना में घुल रहा था वैसे वैसे ही मेघना की चूड़ियों की खनक उस हल्के बज रहे संगीत में घुल रही थी।

जब वक्त आया तो मेघना ने इन्दर की हथेली को अपनी हथेली में कस के थाम लिया। फिर एक मधुर आवाज के साथ मेघना इन्दर के गले से पूरी तरह लिपट उसे महसूस करने लगी।

शब्द धीरे धीरे कम होते गए, पर धड़कने एक दूसरे को सुन रही थी। बाहर चाँदनी थी और भीतर दो लोग पहली बार इतनी गहराई से एक दूसरे के स्पर्श को महसूस करने में तल्लीन थे।

उनकी निकटता में आकर्षण से ज्यादा सम्मान था, और चाहत से ज्यादा अपनापन।

जैसे दो थकी हुई रूह को लंबे सफर के बाद अपना ठिकाना मिल गया। मेघना इन्दर के कंधे पर सिर रखे खामोशी से अब भी उस लम्हा को महसूस कर रही थी। इन्दर ने मेघना के माथे को चुमा और मेंहदी लगी हथेलियों पर एक प्यारा चुम्बन देकर अपने हाथ में मेघना के हाथ को थाम लिया, जैसे वादा कर रहा हो यह हाथ अब हमेशा के लिए इन्हीं हाथों में सजा रहेगा।

दुनियादारी (माँ बाप या प्रेम)

इन्दर एक शाम मेघना की गोद में सिर रखे लेटा था। इन्दर आसमान को निहारते हुए हल्के स्वर में कहता हैं। मेघा कभी यह समाज नहीं माना, कभी हमारे अपने नहीं माने, तो हम क्या करेंगे। मैं तुम्हें कभी खोना नहीं चाहता। ऐसे लगता है जैसे –

''कहीं दूर चलते है, एक दुनिया बसा लेते हैं।
जहाँ बस तुम हो, मैं रहूँ और हमारा इश्क हो।
न समाज की बंदिशें हों, न किसी की परछाइयाँ।''

मेघना कुछ पल चुप रही। उसकी उंगलियाँ इन्दर के बालों में ठहरी, मानो वह शब्दों से पहले अपने मन को साझा कर रही हो।

मेघना–पता हैं इन्दर जिस दुनिया की बात तुम कर रहे हो वह शायद बहुत सुंदर हो पर उस सुंदरता की नींव में मेरे माँ–पा की टूटी उम्मीदें होंगी।

सोचो इन्दर जिन्होंने बीस वर्षों तक मेरी हर साँस को अपनी दुआओं में पाला है, **यदि आज मैं उन्हीं के विश्वास को तोड़ दूँ तो कल को तुमसे बेहतर विकल्प मिलने पर तुम्हें छोड़ देने में भी मुझे कोई अपराध बोध नहीं होगा।**

जो बेटी अपने माँ–बाप के प्रेम की मर्यादा नहीं निभा सकी, वह प्रेमिका बनकर कभी सच्चे प्रेम को निभा ही नहीं सकती। जो लड़की अपने घर की चौखट का मान न रख सके, वह किसी के दिल की दहलीज कैसे लंबे समय तक सुरक्षित रख पायेगी, इन्दर।

हमारा इश्क पवित्र हैं, इसमें कोई मलिनता नहीं। पर एक सत्य यह भी है कि **दुनिया में एक प्रेम ऐसा होता है जो हर प्रेम से पहले जन्म लेता है–माँ बाप का निस्वार्थ स्नेह।**

इसके बाद भी यदि मैं तुम्हारे साथ चलकर अपनी दुनिया बसा लूँ तो यह इश्क नहीं, मेरे स्वार्थ की सबसे सुंदर सजावट होगी।

मेघना की आँखों में नमी थी।

और इन्दर पहली बार समझ रहा था—कि **सच्चा प्रेम केवल पाने में नहीं, कई बार त्याग की मर्यादा में बसता हैं।**

तो क्या मेघना जो प्रेमिकाएं अपने प्रेमी के साथ अलग दुनिया बसा ले वह सभी गलत ही होती हैं—इन्दर ने सहसा स्वर में कहा।

मेघना—निः संदेह इन्दर। जरा सोचो जिन्होंने अपने माँ के ममत्व का मान नहीं रखा, जिन्होंने उस पिता को एक पल में छोड़ दिया जिसने उसे पहला कदम चलना सिखाया। क्या तुम्हें लगता हैं वो तुम्हारें प्रेम में आजीवन बनी रहेगी। नहीं इन्दर वो अभी तुम्हारे साथ इसलिए होगी क्योंकि उसे तुम फिलहाल के लिए बेहतर विकल्प लगते हो।

इन्दर—तो फिर यह एहसास जो लड़कियाँ माँ—बाप को छोड़ चली जाती है उनके मन में क्यों नहीं आता?

मेघना—''मनुष्य का मन बड़ा विचित्र होता है, इंदर। **जब वह कोई निर्णय ले लेता है, तो सत्य को नहीं बदलता बल्कि अपने भीतर ऐसे तर्क गढ़ लेता है जो उसके निर्णय को ही सत्य बना दें।**

गलती का बोझ उठाना हर किसी के बस की बात नहीं होती, इसलिए बहुत लोग **अपने कर्मों के चारों ओर सही होने का एक आवरण बुन लेते हैं।**

उन्हें लगता है कि वे दुनिया से नहीं,

बस अपने दिल की आवाज से चल रहे हैं।

पर सच तो यह है कि

कभी कभी दिल की आवाज नहीं,

हमारे अहंकार की प्रतिध्वनि बोल रही होती हैं।

और जब मन अपने ही बनाए तर्कों में खुद को निर्दोष घोषित कर देता है,

तब इंसान को अपनी भूल भी एक आदर्श निर्णय जैसी लगने लगती हैं।

इन्दर—मेघा। तुम्हें खोने से डर लगता हैं। इसलिए ऐसी बातें कर बैठता हूँ। मैं आजीवन तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ।

मेघना–इन्दर, हमारे इश्क की सजावट इतनी सुन्दर हैं ना कोई चाह कर भी हमें अलग नहीं कर पायेगा। फिलहाल अपनी सफलता और माँ बाप के सपनों पर ध्यान दो। यह मेघना कहीं नहीं जाने वाली–मेघना ने चुटकी लेते हुए कहा।

इन्दर–कभी जाने भी नहीं दूँगा। कोशिश भी मत करना मेघा।

एक बार फिर प्यार भरी बातों का सिलसिला शूरू हो गया। इन्दर और मेघना ने बातचीत कहीं से शूरू की हो पर अंत में वो प्यार भरी बातों पर ही लौट आती थीं।

दुनियादारी (12th के बाद का रास्ता)

इन्दर और मेघना आर ए एस की तैयारी के साथ साथ बी एड भी कर रहे थे। बी एड इन्टर्नशिप के लिए दोनों ने एक ही स्कूल भरा और संयोग से दोनों को एक ही स्कूल में इटर्नशिप करने का मौका मिल भी गया। एक दिन दोनों स्कूल से लौट रहे थे। तभी उनके बीच स्कूलिंग को लेके बाते होनी शूरू हो जाती हैं।

इन्दर–''मेघा 12वीं बाद ''सब कहते हैं मेहनत करो, कोचिंग जॉइन करा फिर भी इतना भटकाव क्यों?

मेघना–''भटकाव इसलिए नहीं होता इन्दर कि रास्ते कम हैं, भटकाव इसलिए होता है क्योंकि अपना रास्ता चुनने की समझ नहीं होती।

कोचिंग संस्थान तुम्हें पढ़ा सकते हैं,
पर तुम्हें 'तुमसे' नहीं मिला सकते
और जब इंसान खुद से ही अनजान हो,
तो कैसे वो सफलता तक पहुँच सकता हैं।

सबसे पहले यह तय करना होता हैं कि हमारी क्षमताएं क्या है और कमजोरियां क्या हैं। और यह तय बहुत ईमानदारी से करना होता हैं। क्योंकि इंसान कभी खुद की कमजोरियों की बात खुद नहीं करना चाहता। इसलिए लक्ष्य तय करने से पहले खुद को खुद से मिलाना जरूरी हैं।

इन्दर–खुद को खुद से मिलाना मतलब?

मेघना–तुमने कभी खुद से पूछा है–तुम्हारी क्या कमजोरियाँ हैं।

तुम किस डर से भागते हो?

तुम्हें किस चीज से सच्चा सुकून मिलता हैं?

तुम्हारा लक्ष्य क्या हैं?

इन्दर ने धीमे स्वर में जवाब दिया–शायद नहीं।

मेघना की आवाज और ज्यादा मार्मिक हो गई–

''यही तो सबसे बड़ी कमी है

90 प्रतिशत बच्चे दुनिया को समझने में लगे रहते हैं,

पर खुद को समझने की कोशिश ही नहीं करते।

उन्हें लगता है वो हमेशा सही हैं

और यही सोच उन्हें सबसे ज्यादा गलत बना देती हैं।

इन्दर की ऑखें अब गंभीर थीं–और जो खुद को समझ लेता हैं?

मेघना–''वो कभी हार कर भी नहीं हारता क्योकि उसे पता होता है–कहाँ गिरा था, और अगली बार कहाँ संभलना है।''

इन्दर ने पूछा–''और जो थोड़ी आजादी के चक्कर में रास्ता भटक जाते हैं?

मेघना–आजादी गलत नहीं हैं इन्दर। पर विद्यार्थी आजादी को परिभाषित ही गलत तरीके से करते हैं।

उन्हें लगता है समाज से बगावत करना, सबको इग्नोर करना और विरोध करना आजादी हैं। यह जो आजादी है, गैर जिम्मेदाराना हैं। और **बिना जिम्मेदारी की आजादी धीरे–धीरे भटकाव बन जाती हैं।**

कुछ बच्चे 12वीं के बाद खुली हवा में सांस लेना चाहते हैं–यह सही हैं। पर अगर उस हवा में दिशा न हो, तो वही हवा तूफान बन जाती हैं।

इन्दर–तो सफलता का असली राज क्या हैं मेघना?

मेघना–''बुद्धि जरूरी है पर उतनी नहीं जितना लोग समझते हैं। प्रतियोगिता में 40 प्रतिशत बुद्धि काम आती हैं, पर 60 प्रतिशत काम आता है–**तुम्हारा आत्म विश्लेषण, तुम्हारा अपने भविष्य के प्रति सजग होना, और तुम्हारा अपने माता–पिता के सपनों के प्रति अपने कर्त्तव्य की समझ और सबसे महत्वपूर्ण उचित अवसर को समय पर पहचान लेना।''**

जो बच्चा ये समझ लेता है कि **उसकी मेहनत सिर्फ उसकी नहीं, उसके माता–पिता की उम्मीदों का उत्तर है वो कभी रास्ता नहीं भटकता।**

इन्दर की आँखे हल्की सी नम हो गईं–''मतलब अगर मैं खुद को समझ लूँ, तो मैं अपने माता–पिता के सपनों को सच कर सकता हूँ।''

मेघना ने मुस्कुराते हुए कहा–**सिर्फ सच नहीं उन सपनों को एक नई ऊँचाई दे सकते हो।**

याद रखना इन्दर–**सही रास्ता वही चुनेगा जो खुद से सच बोलने की हिम्मत रखता हैं।**

इन्दर–"मेघा 12वीं के बाद रास्ते इतने धुंधले क्यों हो जाते हैं? लगता है जैसे समय बहुत है, अभी सामने पूरी जिंदगी पड़ी है, पर जब इस राह पर कदम रखने लगते हैं तो समय इतना जल्दी बीत जाता है, **कब 18 की उम्र 30 में बदल जाती हैं, पता ही नहीं चलता।**

स्टूडेन्टस् कुछ करे उससे पहले सब समाप्त हो जाता हैं–उसका हौंसला, उसका समय सब। कुछ स्टूडेन्टस की परिस्थितियाँ उनका साथ नहीं देती।

मेघना–नहीं इन्दर समय बहुत होता हैं। पर हम परिस्थितियों और समय को समझने की बजाय उन्हें दोष देना जानते हैं। हम 12वीं बाद ग्रेजूएशन और बीएड़ जैसी डिग्रीयों में समय निकाल देते है और इन चार से पांच वर्षों में हम अपना लक्ष्य तक निर्धारित नहीं कर पाते। जबकि लक्ष्य का निर्धारण 12वीं के साथ ही हो जाना चाहिए। रही बात परिस्थितियों कि तो मैं ऐसे बहुत उदाहरण जानती हूँ जो **गरीबी, और समय की विपरित धारा के बावजूद भी चमक उठते हैं।**

और **समय की विपरीत धारा और बुरी परिस्थितियाँ कभी बाधक नहीं बल्कि हमें इन्हें अपना मोटिवेशन का हथियार बनाना चाहिए।**

धारा के विरूद्व तैरता व्यक्ति ही अपने अस्तित्व का वास्तविक अर्थ पहचान पाता हैं।

वह बताता है कि **कठिनाइयाँ उसकी रूकावट का कारण नहीं बल्कि उसके साहस की सबसे सच्ची परीक्षक थीं।**

बातों ही बातों में इन्दर और मेघना अपने पसंदीदा गार्डन में जा बैठे। मेघना की गोद में सोकर इन्दर आसमाँ को निहार रहा था, तो दूसरी तरफ मेघना इन्दर के बालों में हाथ घूमा रही थी। तभी मेघना बोल उठी–इन्दर देखो ना मौसम कितना अच्छा हैं, कुछ सुना दो ना।

इन्दर–अच्छा जी।

मेघना–हम्म्म जी। सुनाओ भी।

इन्दर—सुनो भी।

पास आऊं तेरे तो अपनी पलके बिछाये रखना।
जब देखूं तेरी ओर तो अपनी नजरें मुझसे मिलायें रखना।
हर कोशिश कर लूंगा तेरे लिए,
बस तू सीने से मुझे लगाये रखना।। 01।।

दोनो की मेहनत में कमी ना होगी, वक्त को यह तू बताये रखना।
कदम कितने भी डगमगाये, तू इन्हें मेरे साथ जमायें रखना।
आंसुओं को तेरे, लबों से पी लूं,
तू खुद को कभी मत रूलाये रखना।। 02।।
तेरे हाथों का जादू इन बालों में हमेशा चलाये रखना।
तेरी गोद में मुझे बस तू सूलाये रखना।
कभी गिरने नहीं दूंगा सपनों की परी को
बस तू मुझे उठाये रखना।। 03।।

जिंदगी हंसीन होगी ना कितनी यार, तू साथ कदम मिलाये रखना।
मारोगे नहीं मुझे पता है, पर अपना मुक्का तुम बनाये रखना।
पकड़ा था पहली बार हाथ जो,
अब छूटेगा नहीं कभी, यह बात दिल को समझाये रखना।। 04

तूफानों से नहीं डरते हम, खुद को मजबूत बनाये रखना।
मुश्किलों में एक दूसरे को सीने से लगाये रखना।
तेरी सादगी का फैन बड़ा मैं,
खुद को सादगी में तू सजाये रखना।। 05।।

इसके बाद दोनों एक लम्बी बाइक राइड पर निकल जाते हैं। बारिश के मौसम में भीगते हुए बेबाक। कभी मेघना इन्दर को पीछे से कस के हग करती तो कभी अपनी गीली जुल्फों से इन्दर को परेशान करती। इन्दर ने कुछ दूर जाके मेघना को अपनी बाइक पर आगे बिठा लिया, पर अपनी तरफ मुँह करा के। बिल्कुल सीने से चिपका के। मेघना इन्दर को हग करते हुए प्यार भरी बाते कुछ सुना रही थी, कुछ सुन रही थी। पास से गुजरती गाड़ियों में बैठे लोग उनके पागलपन पर मुस्कुरा रहे थे।

दुनियादारी (किसान)

मेघना और इन्दर हमेशा रोमांश में डूबे रहने के बावजूद भी दुनियादारी की दो चार बातें कर लेते थे। लहराते खेतों की साइड़ में बनी रोड़ पर चल रहे मेघना और इन्दर आज बातों ही बातों में इसी ओर फिर से चल पड़ते हैं।

मेघना—इन्दर कितने खुबसूरत लगते हैं, यह लहराते हुए हरे भरे खेत। हम राहगीरों को जब इतना सुकून दे जाते हैं तो किसान कितना सुकून पाते होंगे इन्दर।

इन्दर—यह सच हैं कि यह लहराते खेत किसानों का सिर्फ सुकून ही नहीं बल्कि उनकी उम्मीद हैं। पर एक कड़वा सच यह भी हैं कि यह जितना आसान दिखता है, उतना आसान है नहीं।

मेघना—पर इन्दर आजकल तो कितने संगठन है जो किसान हितैषी हैं। हर कोई किसान हित की बात करता है तो यह इतना मुश्किल कैसे है?

इन्दर—मेघा वो **संगठन किसान हितैषी नहीं, बल्कि किसान उन संगठनों के हितैषी** हैं। वह संगठन सिर्फ इन भोले किसानों के दम पर अपनी राजनीतिक रोटियां सेक रहे हैं। उन्हें किसान हित से कोई मतलब नहीं हैं।

पता है मेघा **जिस दुनिया में कागज का डिब्बा मिठाई के भाव बेच दिया जाता हैं, उसी दुनिया में किसान की फसल की बारी आने पर उसकी बोरी का वजन काट लिया जाता हैं।** यह दौगलापन क्यों?

सरकार को क्रिटिसाइज करने वाला और किसान हित के स्टेटस रखने वाला बिजली विभाग का कार्मिक जो किसान हित का झंड़ा उठाए खड़ा हैं।

जो नेताओं को कोसता है,

उनकी नीतियों पर उँगली उठाता है,

भीड़ ताली बजाती है—उसे एक सच्चा हमदर्द मान लेती हैं।

पर

जब वह ऑफिस में अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है

जहाँ किसान अपने खेतों की रोशनी (पानी) के लिए उसके सामने हाथ जोड़कर खड़ा होता हैं।

वो फाइल खोलता है, चश्मा ठीक करता है, और फिर धीमे से कहता है–

''काम तो हो जाएगा बस थोड़ा ध्यान रखना पड़ेगा।''

ध्यान यानी कुछ नोट, जो **किसान अपनी जरूरतों को कम करके उसे मेज पर रख देता हैं।**

और वो सरकारी बाबू जिसने सुबह किसान हित की बातें की थी। वह उन्हीं किसानों के हक को चुपचाप नाप–तौल कर बेच रहा होता हैं।

अजीब है न यहाँ दुश्मन बाहर नहीं, भीतर बैठा होता हैं।

जो भाषणों में हमदर्द, और हकीकत में सौदागर बन जाता हैं।

किसान फिर भी चला जाता है, क्योंकि उसे रोशनी चाहिए और वो ये नहीं समझ पाता–कि **उसके खेतों की अंधेरी रातों का असली कारण वही ''रोशनी देने वाला'' तो नहीं।**

एक पटवारी जब किसान की फसल खराब हो जाती है तो रियल रिपोर्ट नहीं बनाता बल्कि अपने ही सगे संबंधी अमीरों को फायदा पहुँचाता हैं या फिर गलत डॉक्यूमेंनटेसन से अपने बैंक खातो को भर लेता हैं।

हम सभी बात तो किसान हित की कर रहे है। पर सच में किसान के हितैषी हम हैं नहीं।

मेघना–तो क्या इन्दर किसान की यह दशा कभी नहीं सुधरेगी।

इन्दर–किसान की दशा का तो पता नहीं। पर इतना हैं, इस देश के नागरिकों की दशा जरूर बिगड़ जायेगी। मजबूरी में किसान किसानी छोड़ देंगे। जब खाद्यान्नों और सब्जियों की कमी आयेगी तो फिर लोग फैक्ट्रियाँ में बने अनाज और सब्जियाँ पर निर्भर होंगे।

जब दुनिया का अंत नजदीक होगा तक किसान की वैल्यू सबको समझ आयेगी, उस बिजली विभाग के कार्मिक को, उस पटवारी को, नेता की चाटूकारिता करने वाले उन सभी नागरिकों को जो सिर्फ बीजेपी या कांग्रेस जैसी पार्टियों

के नाम पर किसान अहित की बात को भी हित की बताने पर संकोच नहीं करते।

मेघना—छोड़ों ना दुनियादारी। तुम यह बताओं तुम्हारी दुनिया क्या हैं।

इन्दर—पहली माँ।

मेघना—और दूसरी?

इन्दर—दूसरी मेघना।

इन्दर और मेघना एक बार फिर प्यार में डूब चले। मेघना जितनी समझदार थी, इन्दर उतना ही ज्यादा रोमांटिक। पर इन्दर के रोमांटिक एहसासों को मेघना हर पल जीना चाहती थीं। इन्दर का प्रेम जीतना सच्चा था उतना फिल्मी भी।

जब कभी मेघना बाइक चलाती और इन्दर पीछे बैठता, तो रास्ते से ज्यादा उसका ध्यान मेघना के बालों पर होता। मेघना अक्सर बालों में इन्दर का पसंदीदा जूड़ा बना के रखती। वो पीछे धीरे से पिन निकाल देता। चलती हवा में मेघना के बाल बिखरकर इन्दर के चेहरे पर फैल जाते और इन्दर उनकी खुशबू को महसूस करता रहता। मेघना झुंझलाकर कहती—''इन्दर। फिर से खोल दिया ना। और इन्दर जवाब देता—

''जुड़े में तुम समझदार लगती हो
और खुले बालों में मेरी ''

और मेघना मुस्कुराकर उसे हल्का सा मार देती।

कक्षा—कक्ष में जब पूरी क्लास पढ़ाई में लगी होती, इन्दर सबसे नजरें चुराते हुए अपने होंठ मेघना के बिल्कुल पास ले जाता। इतने पास कि मेघना की साँसें अटक जातीं। और ठीक उसी पल, जब मेघना की आँखें बंद होने लगती—इन्दर मुस्कुराकर पीछे हट जाता।

मेघना गुस्से में कहती—पागल हो क्या तुम?

और इन्दर कहता—हाँ तुम्हारे लिए। मुझे तो बस तेरी धड़कने सुननी थी।

जब भी बारिश होती इन्दर मेघना के साथ कभी बाइक राइड़ पर निकल जाता। तो कभी बिना छाते के खुली सड़क पर पैदल। वो बारिश में पैदल चलते मेघना का अचानक हाथ पकड़ता और अगले ही पल उसे अपनी बाँहों में उठाकर गोल—गोल घुमाने लगता।

मेघना चीखते हुए हँस पड़ती—इन्दर गिरा दोगे मुझे।

और इन्दर कहता—मेरी बाहों में मेरी अपनी दुनिया हैं इसे कैसे गिरा सकता हूँ।

जब वो बारिश में बाइक पर जाते तो इन्दर बाइक चलाते वक्त मेघना को अपनी ओर मुँह कराके आगे बिठा लेता और मेघना पूरी तरह उसके सीने में खुद को छिपा लेती। जब कभी मेघना को ठण्ड़ लगने लगती, तो वो सड़क किनारे किसी छोटी टपरी पर चाय का ऑर्डर देता और मेघना के हाथ अपने हाथों में लेके अपने स्पर्श से मेघना को गरमाहट महसूस कराता। कभी मेघना के दोनों गालों पर अपने हाथों की हथेलियों को रखता और उसे देखता रहता। जब कभी भी बारिश में इन्दर सड़क किनारे भूट्टे खाने को मेघना को लेकर जाता वो मेघना के हिस्से के भूट्टे के खुद नींबू और मसाला लगाता मजाकिया अंदाज में यह कहते हुए कि—यह तुम्हारें लिपस् को छुअेगें। यह हक मैं कैसे किसी ओर को दे सकता हूँ।

चाय की छोटी सी थड़ी दोनों की पसंदीदा जगह थी। वो वहाँ घंटों बैठ सकते थे—सिर्फ एक कुल्हड़ चाय के लिए। मेघना अक्सर बातें करती रहती—अपनें सपनों की, डर की और भविष्य की और इन्दर वो अब उसे टकटकी लगाते हुए देखता रहता। इतनी गहराई से कि मेघना कई बार झेंप जाती।

'ऐसे क्या देख रहे हो?'—वो कहती।

इन्दर मुस्कुराकर कहता—अपनी छोटी सी दुनिया।

जब कभी दोनों मंदिर जाते। मेघना आँखें बंद करके प्रार्थना करती रहती, और इन्दर उसे देखता रहता।

''भगवान से क्या माँगा?''—इन्दर बाहर आकर पूछता।

मेघना मुस्कुराती—''नहीं बताऊँगी।

''मुझे पता है क्या मांगा?'' इन्दर धीरे से उसके कान के पास झुकता और कहता—''मुझे ही माँगा ना।''

मेघना हंसते हंसते उसका हाथ पकड़ लेती और उस पल, दुनिया की सारी प्रार्थनाएँ छोटी लगने लगतीं।

जब भी इन्दर सड़क किनारे चलता तो मेघना का हाथ पकड़े रखता और खुद सड़क की तरफ रहता। कई बार भीड़ में चलते—चलते रूक जाता और कहता—''बस एक मिनट ''

मेघना–''क्या हुआ?''

''कुछ नहीं तुम्हें देखना हैं।''–इन्दर बोल पड़ता।

मेघना हँस पड़ती। पर उसके भीतर कहीं गहराई में, वो हर बार थोड़ा और इन्दर की हो जाती।

कभी कभी इन्दर बिन पूछ भीड़ में मेघना के पास आता और खामोशी से मेघना के गले लग जाता। जैसे–

गले लगना एक प्रक्रिया हैं, पर पसंदीदा इंसान से गले मिलना ईश्वर से गले मिलने के बराबर हैं।

सर्दियों की शाम में जब भी दोनों शहर की सुनसान सड़क पर पैदल चलते और मेघना को ठण्ड़ लगने लगती, इन्दर अपना कोट उतार उसे पहना देता–बस यह कहते हुए–तुम्हें ठण्ड़ लगने दूँ, इतना भी गरीब नहीं हूँ।

जब भी मेघना नाराज होती, तो इन्दर उसे मनाने का अपना अलग ही तरीका रखता। वो कुछ नहीं कहता। बस उसके सामने बैठकर चुपचाप उसे निहारने लगता।

''क्या है?''–मेघना गुस्से में पूछती।

इन्दर धीरे से कहता–''गुस्से में भी मेरी दुनिया खुबसूरत दिखती हैं।''

मेघना–''बात मत करो मुझसे''

इन्दर–''ठीक हैं।'' और फिर बिना पलकें झपकाए मेघना को देखता रहता।

और मेघना लाख कोशिश करके भी अपनी हँसी नहीं रोक पाती।

एक बार दोनों बाइक से बहुत दूर निकल गए। शाम ढल चुकी थी। सड़क लगभग खाली थी। मेघना ने अचानक बाइक रोकी और बोली–''थक गई हूँ। अब बाइक इन्दर चलायेगा।''

इन्दर उतरा। फिर बिना कुछ कहे सड़क किनारे बैठ गया और अपनी गोद थपथपाई।

''आओ ''

''पागल हो क्या?''–मेघना हँसने लगी।

पर अगले ही पल वो सचमुच इन्दर के पास जाके साइड़ हग करते हुए अपना सिर इन्दर के कंधे पर टिका लिया।

हवा उसके बाल उड़ा रही थी। इन्दर धीरे–धीरे उसकी लटों को अपनी उँगलियों में उलझाता रहा।

जब मेघना और इन्दर बाइक से लौट रहे थे। सिग्नल पर बाइक रूकी। चारों तरफ लोगों की आवाजाही थी, पर इन्दर का ध्यान सिर्फ मेघना पर था।

मेघना ने हेलमेट थोड़ा ऊपर किया और बाल कानों के पीछे करने की कोशिश करने लगी। तभी इन्दर ने अपने हाथों से उसके बाल ठीक किये। साथ ही उसके गाल पर लगी काजल की हल्की सी फैली रेखा अपनी उँगली से साफ कर दी।

मेघना चौंकी।

''क्या कर रहे हो सब देख रहे हैं।

इन्दर हल्का सा मुस्कुराया–''देखने दो '' मैं तो बस अपनी सबसे पसंदीदा औरत का ख्याल कर रहा हूँ। दुनिया से मुझे क्या।

कभी कभी इन्दर मेघना को कॉल करता और कहता बाहर आओ बालकनी में।

मेघना–''क्यों?''

इन्दर–''बस देखना हैं तुम्हें''

मेघना हल्का गुस्सा करती पर हर बार बाहर आ जाती। शायद उसे भी बालकनी में आना उतना ही अच्छा लगता, जितना इन्दर को बालकनी में आने के बाद मेघना को एक नजर देखना।

इन्दर मेघना से सिर्फ प्रेम नहीं करता था बल्कि वो उसे अपनी जिंदगी में सबसे पवित्र मानता था।

मजबूरियाँ या वादा?

मेघना और इन्दर का प्यार अब सिर्फ एहसास नहीं रहा था, वह एक वचन बन चुका था–साथ जीने का, साथ मरने का। वो एक–दूसरे में इस तरह बस चुके थे, जैसे प्रार्थना में भगवान बस जाता हैं। उनकी दुनिया छोटी थी, पर एकदम सच्ची और शायद इसी सच्चाई को किस्मत की नजर लग गई। क्योकि सच ही कहा हैं किसी ने–

अपने प्रेम को छुपा कर रखो, वरना दुनिया की नजर लग जायेगी।

शाम ढल रही थी। आकाश में हल्की उदासी घुली हुई थी, तभी इन्दर का फोन बजा।

मेघना का कॉल था। इन्दर ने मुस्कुराते हुए कॉल उठाई, पर अगला ही पल उसकी दुनिया को जैसे चुप कर गया। दुसरी तरफ सिसकियाँ थीं टूटी हुई, बिखरी हुई।

मेघना–''इन्दर पापा '' और फिर शब्द जैसे कहीं खो गए। मेघना इससे आगे कुछ बोल ही नहीं पाईं। **''जब दर्द हद से गुजर जाता है, तो आवाज नहीं सिर्फ खामोशी रोती हैं।**

इन्दर ने जब हिम्मत दी तो किसी तरह खुद को संभालते हुए मेघना ने कहा–''इन्दर पापा की आज रिपोर्टस् आईं। डॉक्टर्स् बोल रहे हैं कि अब वो कुछ ही दिनों के मेहमान हैं। उन्हें फाइनल स्टेज का कैंसर हैं।

यह सुनते ही इन्दर के भीतर जैसे कोई दीपक बुझ गया। पर उसने अपने दर्द को निगल लिया, क्योंकि इस वक्त उसका टूटना, मेघना को और तोड़ देता।

इन्दर–मेघना। अभी तुम कहाँ हो? मैं आ रहा हूँ।

मेघना–हॉस्पिटल। पापा के साथ।

इन्दर–ठीक हैं। मैं आ रहा हूँ।

मेघना–नहीं इन्दर। मम्मी पापा भी हैं यहाँ। माना मम्मा को पता है पर अभी पापा को कुछ भी हमारे बारे में नहीं पता।

इन्दर—नहीं मेघा। मैं आ रहा हूँ।

इन्दर कुछ ही देर में अस्पताल पहुँच गया। मेघना दीवार की ओर मुँह किए हाथ जोड़े खड़ी थी। मेघना को देख लगा—**दुनिया में सबसे ज्यादा प्रार्थनाएं मंदिर, मस्जिद या गिरजाघरों में नहीं, अपितु अस्पताल की दीवारों से ही की जाती हैं, क्योंकि जुदाई के क्षणों महसूस किया जाता हैं, सबसे ज्यादा प्रेम।**

मेघना की आँखें सूजी हुई, उम्मीदें थकी हुईं सी थी। इन्दर मेघना के पास गया और बिना कुछ कहे उसका हाथ थाम लिया। क्योंकि कुछ साथ शब्दों से नहीं, स्पर्श से निभाए जाते हैं।

मेघना खुद को रोक नहीं पाई और बिना किसी की परवाह किए इन्दर से लिपट कर रोने लगी। इन्दर, ''पापा।'' इससे ज्यादा मेघना के शब्द नहीं थे।

इन्दर ने मेघना को संभाला, साथ ही उसकी नजर कुछ दूर खड़ी मेघना की माँ पर भी थी, जो उन्हें देख रही थी।

इन्दर—मेघा। सब ठीक हो जायेगा। और तुम ऐसे करोगे, तो मम्मा का क्या होगा? इन्दर ने मेघना की मम्मी की तरफ इशारा करते हुए कहा।

इन्दर मेघना को मम्मा को संभालने का बोलते हुए उस कमरे की ओर बढ़ा, जहाँ जिन्दगी अपने आखिरी पन्ने लिख रही थी। दरवाजा हल्का सा खुला था। अंदर एक कमजोर सा शरीर, मशीनों की धीमी आवाजों के बीच लेटा हुआ था। इन्दर धीरे धीरे उनके पास गया। उनका कमजोर सा हाथ पकड़ा और उसे चुम लिया, जैसे इन्दर का कोई अपना उसे छोड़ के जाने वाला हो। पास ही पड़ी रिपोर्टस् को जब इन्दर ने देखा तो समझ आ गया कि आगे आने वाला समय मेघना के लिए अपनी दुनिया को खो देने से कम नहीं होगा।

इन्दर मेघना के पिता के कमरे से जब बाहर निकला तो गलियारे में अब भी मेघना और उसकी माँ खामोश बैठी थीं। जैसे वक्त उनके सामने बैठकर धीरे धीरे सब कुछ छीन रहा हो।

''आप लोगों ने सुबह से कुछ खाया भी नहीं होगा।''—इन्दर ने धीमी, पर दृढ़ आवाज में पूछा।

दोनों की तरफ से कोई जवाब ही नहीं आया। इन्दर समझ चुका था—**दर्द जब हद से बढ़ जाता है, तो भूख भी इंसान का साथ छोड़ देती हैं।**

इन्दर बिना कुछ कहे, सीधा अस्पताल की कैंटीन की ओर चला गया। कुछ ही देर में वह साधारण सा खाना लेकर लौटा—पर उस खाने में स्वाद हो ना हा,, उसका अपनापन शामिल था।

वो उनके पास बैठा–''थोड़ा सा खा लीजिए आपको मजबूत रहना होगा।''

मेघना ने मना करना चाहा, पर इन्दर की आँखों में एक अजीब सी जिद्द थी। वही जिद्द जो प्यार में ख्याल बनकर उभर रही थी।

वो खुद अपने हाथों से निवाला तोड़कर पहले मेघना की माँ को देने लगा–''आंटी, प्लीज ''

उनकी आँखें भर आईं इसलिए नहीं कि वो भूखी थीं, बल्कि इसलिए कि इस अनजान लड़के में उन्हें एक अपना सा सहारा दिख रहा था।

''कभी कभी खून के रिश्ते नहीं, हालात इंसान को अपना बना देते हैं।''

फिर उसने मेघना की ओर देखा–वो चुपचाप उसे देख रही थी, जैसे इस छोटे से ख्याल में भी उसे पूरा प्रेम दिख रहा हो।

इन्दर ने धीरे से कहा–अगर तुम कमजोर पड़ गई, तो अंकल को कौन संभालेगा?

ये सुनकर मेघना की आँखों से आँसू गिर पड़े और उसने चुपचाप वो निवाला स्वीकार कर लिया।

इन्दर के प्रेम को देखकर लग रहा था जैसे–**सच्चा प्रेम अक्सर बड़े वादों में नहीं, छोटे छोटे ख्यालों में छुपा होता हैं।**

अगले पन्द्रह दिनों तक, जब तक मेघना के पिता अस्पताल में भर्ती रहे, इन्दर चुपचाप उनके साथ एक साया बनकर खड़ा रहा। वह हर दिन बिना थके आता–कभी दवाइयों का ध्यान रखता, कभी डॉक्टरों से बात करता और सबसे ज्यादा मेघना और उसकी माँ को संभालता। वो उन्हें समय पर खाना खिलाता, खुद सामने बैठकर एक एक निवाला खाने को मनाता। उनकी थकी हुई आँखों में थोड़ी सी नींद और टूटते मन में थोड़ा सा सहारा बन जाता। इसी बीच एक दिन मेघना की माँ और इन्दर दोनों अकेले बैठे थे। यह वहीं समय था–जिसका मेघना की माँ इंतजार कर रही थी।

मेघना की माँ ने इन्दर के आगे काँपते हुए हाथ जोड़े–''बेटा मैं जानती हूँ, तुम दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हो। इतना कहते की उनकी आवाज भर गईं। ''पर अब हालात हमारे हाथ में नहीं हैं।''

फिर वो रो पड़ी–''मैं तुमसे हाथ जोड़कर विनती करती हूँ ऐसा कुछ मत करना जिससे उनके दिल को चोट लगे '' **उनके हर शब्द में एक माँ का डर था, और एक पत्नी की बेबसी।**

इन्दर चुप रहा उसके पास कोई जवाब नहीं था।

''इन्दर मेघना के पापा की इच्छा थी कि वो अपनी बेटी की धूमधाम से शादी कर सके, अपनी पसंद से, अपनी ही जाति में। ''अगर वो ये सपना टूटता देखेंगे तो शायद जीते जी मर जाएंगे ''। प्लीज बेटा अपनी खुशियों के लिए मुझसे मेरा सब कुछ मत छीन लेना। तुम बहुत अच्छे हो, तुम्हें कोई भी लड़की मिल जायेगी, पर मेघना के पापा को दूसरी बेटी नहीं मिलेगी। मैं मेघना को नहीं समझा पाऊँगी, वो बहुत जिद्दी हैं। हमारी एक ही बेटी है बेटा अगर वही हमारे सामने खड़ी हो गई तो हम किस सहारे जिएगें'' प्लीज बेटा, **इस विनती को मेघना के पापा की आखिरी ख्वाहिश समझ के मेरी झोली में डाल दो।**

इन्दर को समझ आ चुका था कि–कभी–कभी किसी की आखिरी ख्वाहिश, किसी और के पूरे जीवन की अधूरी कहानी बन जाती हैं। और सच यह भी है–माँ– बाप के सपने अक्सर बच्चों के प्रेम से बड़े हो जाते हैं और बच्चे चुपचाप छोटे हो जाते हैं।

किसी के अंतिम दिनों की शांति, किसी और की पूरी जिंदगी की सबसे बड़ी कुर्बानी मांग चुकी थी। इन्दर की आँखें नम हो गई, पर उसने आँसू गिरने नहीं दिए। इन्दर ने अपने अंदर उठ रहे तूफान को संभाला और उसे मेघना की माँ को दिए एक वादे में बदल दिया। उस पल इन्दर ने अपने प्यार को नहीं, अपने आप को कुर्बान कर दिया। इन्दर ने मन नही मन एक फैसला कर लिया–वह खुद ही मेघना से दूर हो जाएगा। कोई बहाना बना लेगा, खुद को भले बुरा बना लेगा लेकिन मेघना के पापा का सपना नहीं टूटने देगा।

वैसे भी **''सच्चा प्रेम साथ पाने की जिद्द नहीं करता वह सही समय पर खुद को खो देने की हिम्मत रखता हैं। उस दिन इन्दर ने अपने प्रेम को नहीं छोड़ा, उसने अपने हिस्से की खुशियों को त्याग दिया।**

इस वादे के बाद भी इन्दर रोज अस्पताल आता। उसके अपनेपन, उसकी देखभाल में रती भर का अंतर नहीं था। उसके अपनेपन को देख के मेघा समझ ही नहीं पाई कि उसके प्रेम का अंत नजदीक हैं।

उन दिनों में अस्पताल में सिर्फ एक इंसान नहीं,
दो जिंदगियाँ धीरे धीरे खत्म हो रही थीं–
एक साँसों से और एक ख्वाबों से।

जुदाई

अस्पताल से घर लौट आने के बाद मेघना सामान्य थी, पर इन्दर हर दिन अपने भीतर थोड़ा–थोड़ा टूटता जा रहा था। **उसके लिए अब हर मुलाकात एक अभिनय सा बन गई।** चेहरे पर वही अपनापन, पर भीतर एक लगातार जलता हुआ विराग। वो मेघना के पास तो था, पर अपने ही वादे से बंधा हुआ बहुत दूर।

एक संध्या–धीमी धुँधली जैसे आसमान भी किसी अनकहे दुख से भरा हो। मेघना इन्दर के करीब बैठी थी। उसने धीरे से इन्दर का हाथ थामा, उँगलियों को अपनी उँगलियों में पिरो लिया, वह इन्दर की आँखों में देख मुस्कुराई जैसे मेघना हर बार करती थी।

पर आज इन्दर की उँगलियाँ ठहरी हुई थी, गर्माहट जैसे कहीं खो गई थी।

मेघना ने उसे गौर से देखा–''इन्दर, आज तुम इतने खामोश क्यो हो?'' थोड़ा रूककर,–''पहले तुम्हारा स्पर्श बोलता था आज चुप क्यों हो? क्या मुझसे कोई गलती हो गई, इन्दर?

प्यार में शब्द झूठ बोल भी जाये, पर स्पर्श कभी झूठ नहीं बोलता।

इन्दर के भीतर कुछ दरक गया। वो चाहता था–बस एक बार, सब सच कह दे। कह दे कि वो उसे छोड़ना नहीं चाहता। पर मेघना की माँ का वादा वादा उसके शब्दों पर पहरेदार बनकर खड़ा था।

इन्दर ने जल्दबाजी में सोचे बहाने को मेघना के सामने रखते हुए कहा–''मेघना अब हमारे इंटरव्यू भी पास हैं। शायद सब सही रहा तो हम एसडीएम बन जाएँ। एक हल्की, बनावटी सी मुस्कान–''मुझे लगता है अब मुझे अपने बारे में घर पर बात कर लेनी चाहिए।''

मेघना की आँखे अचानक चमक उठी। आज फिर **शब्द झूठे स्पर्श को हरा चुके थे।** वो खिल उठी–''हाँ, बिल्कुल करो बात मुझे तो बस तुम्हारा ही होना हैं।''

उसने हँसते हुए, पर भीगी आँखों के साथ कहा–''जब तुम कहोगे, उसी दिन शादी कर लेंगे।

फिर थोड़ा रूककर, गंभीर होकर–''घर पर पापा की तबीयत की वजह से मुझ पर भी शादी का बहुत प्रेशर हैं इन्दर। मैं चाहती हूँ, जल्दी इंटरव्यू हो जाये फिर मैं अपने घर वालों को मना लूंगी। नहीं माने तो जिद्द कर लूंगी।

उसने इन्दर का हाथ और कसकर पकड़ा–''पर तुम पीछे मत हटना तुम भी बात करना प्लीज।''

इन्दर का हाथ मेघना के हाथ से फिसलता हुआ, अकेला हो गया। जैसे कह रहा हो– मैं पीछे हट चुका मेघना। पर मेघना ने उस दिन **स्पर्श से ज्यादा इन्दर के शब्दों को महत्व दिया।**

इन्दर ने सिर हिलाया–हाँ, मैं बात करूँगा।

मेघना उस दिन बहुत खुश थी कि जल्द ही इन्दर अपने घरवालों को मना लेगा और फाइनल रिजल्ट बाद वो शादी कर लेंगे। इन्दर जब मेघना के पास से वापस लौटा तो अब खुद को संभालना उसके लिए मुश्किल होता जा रहा था। उसने सोनम जो सिर्फ दोस्त नहीं थीं, एक कंधा थी जिसने हर दुख में इन्दर को सहारा दिया, से मिलने पहुँच गया।

सोनम ने इन्दर को देखा और बिन कुछ पूछे समझ गई कि **आज इन्दर को शब्द नहीं सहारा चाहिए।**

क्या हुआ इन्दर?–उसने धीमे से पूछा।

इन्दर कुछ पल चुप रहा फिर जैसे बाँध टूट गया हो। उसने अस्पताल की हर बात, मेघना की माँ का वचन, अपने भीतर की टूटन सब कुछ कह डाला।

हर शब्द के साथ इन्दर का स्वर भारी होता गया। **कुछ सच ऐसे होते हैं, जिन्हें कह देना भी दिल को हल्का नहीं कर पाते, पर छुपा लेना उसे और भारी बना देते हैं।** इन्दर ने सारा सच सोनम के सामने रख दिया।

सोनम ने उसकी तरफ देखा–उसकी आँखों में पहली बार इतना असहायपन था।

इंदर खुद को रोक नहीं पाया–वो अचानक आगे बढ़ा और पहली बार, सोनम को गले लगा लिया। **वो आलिंगन प्रेम का नहीं, एक टूटे हुए इसांन का सहारे से लिपटने का था।**

सोनम ने भी उसे थाम लिया–बिल्कुल वैसे, जैसे एक सच्चा दोस्त थामता है बिना सवाल, बिना शर्त।

"तू अकेला नहीं है " मैं हूँ ना।

उसने धीरे से कहा, ''और जो तू कर रहा है वो आसान नहीं हैं।'' पर मैं इस राह में तेरे साथ रहूँगी, जब, जैसे, तुझे चाहिए।

इन्दर की आँखों से आँसू बह निकले–''मैं उसे खो नहीं रहा, सोनम मैं उसे जानबूझकर खुद से दूर कर रहा हूँ। वो मुझे गलत समझेगी नफरत करेगी। पर शायद यही सही हैं।''

सोनम–कभी कभी सही होने का मतलब, खुश होना नहीं होता इन्दर। **''अगर तेरे एक झूठ से उसके घर की खुशियाँ बनी रहे तो यह झूठ पाप नहीं किसी की जिंदगी बचाने की कीमत हैं।**

इन्दर ने उसकी तरफ देखा–''तो मैं क्या करूँ?

सोनम ने गहरी साँस ली–''उसे यह मत बताना कि तू मजबूर है उसे ये यकीन दिला कि तेरे घर वाले नहीं माने।'' हो सकता है वो तुझसे लड़े तुझसे नफरत करे पर वो खुद को दोष ना दे।''

इन्दर चुप रहा–वो समझ रहा था, ये रास्ता कितना कठोर हैं।

सोनम–''और धीरे धीरे उसे भी मना लेंगे '' कि ये रिश्ता अब संभव नहीं हैं। ''वो टूटेगी बहुत रोएगी पर एक दिन संभल जाएगी।''

इन्दर ने आँखें बंद कर लीं–**जैसे अपने ही प्रेम का अंतिम संस्कार देख रहा हो।**

फिर दोनों उस मंदिर की ओर चल पड़े–वहीं मंदिर, जहाँ कभी इन्दर ने आँखें बंद कर मेघना को अपनी जिंदगी में माँगा था और किस्मत ने सच में उसे दे दिया था।

आज वही जगह गवाह बनने वाली थी–उस प्रेम के अंत की, जो कभी प्रार्थना बनकर शुरू हुआ था।

भगवान के सामने इन्दर हाथ जोड़ खड़े हो गया। फिर उसके होंठ काँपे–**''भगवान इस जन्म में अगर उसे मेरा होना नहीं लिखा तो ठीक हैं। पर अगले जन्म में उसे सिर्फ मेरा बना देना।'' ''बस भगवान! अगली बार इतना कर देना, कि हमें अलग होने की वजह ही न मिले।**

''कुछ प्रेम कहानियाँ जो इस जन्म में पूरी नहीं होतीं
वो अगले जन्म की उम्मीद बनकर जिंदा रहती हैं।''

पर सोनम जानती थी कि–अगला जन्म कुछ नहीं होता, इन्दर और मेघना अब सदा के लिए बिछड़ने वाले हैं।

इन्दर ने धीरे से आँखें खोलीं। चेहरे पर एक अजीब सी शांति थी–जैसे उसने अपने प्रेम को अगले जन्म तक के लिए भगवान को सौंप दिया हो।

उसने इस जन्म में उसे खो दिया पर अगले जन्म की उम्मीद में, अपने प्रेम को अमर कर दिया।

मंदिर सिर्फ पत्थरों की इमारत नहीं होते, कई लोग वहाँ अपना टूटा हुआ मन छोड़कर थोड़ी शांति और जीने की हिम्मत लेकर लौटते हैं।

सोनम से मिलने के अगले दिन इन्दर अपने गाँव को आ गया, इसलिए नहीं कि उसे अपने माता–पिता से कोई बात करनी थी बल्कि इसलिए ताकि वह अपने भीतर के शोर से थोड़ा दूर चला जाए या उस झूठ को गढ़ने जो उनके सच को हमेशा के लिए खत्म कर दे। वो जानता था, वो घर पर कोई बात नहीं करेगा। पर लौटकर उसे एक ऐसा उत्तर देना होगा, जो मेघना के सारे सपनों को एक ही पल में तोड़ दे।

जब वो वापस आया, मेघना की आँखों में कई रातों का इंतजार था और उन इंतजारों में बुने हुए अनगिनत सपने।

''क्या कहा घर वालों ने?''–मेघना ने बड़ी उत्सुकता से पूछा। मेघना की आवाज में एक उम्मीद थी, और वहीं उम्मीद मेघना का पूरा जीवन थी।

इन्दर ने उसकी आँखों में देखा और पहली बार, उसे अपनी नजरें भारी भारी लगीं।

''मेघना'' उसकी आवाज धीमी थी, पर भीतर बहुत कुछ टूट रहा था–पापा नहीं मानेंगे याररर।

पापा ने साफ मना कर दिया कहा इंटरकास्ट शादी नहीं होगी।

एक पल–बस एक पल में, मेघना की आँखों का उजाला बुझ गया।

इन्दर ने आगे कहा–''और मेघा तुम जानती हो मेरे लिए मेरी माँ सब कुछ है मैं उनका दिल नहीं तोड़ सकता '' और पापा , समाज में उनकी अपनी रेपुटेशन हैं मेघा।

मेघना—**समाज की परवाह उस दिन करना, जिस दिन समाज तुम्हारे घर का खर्चा उठा ले।**

इन्दर—नहीं मेघा, सब अब वैसा नहीं हैं, जैसा हम सोचते थे।

मेघना पीछे हट गई—जैसे किसी ने उसके पैरों के नीचे से जमीन खींच ली हो।

''नहीं ये सच नहीं हो सकता''—मेघना ने धीरे से कहा।

फिर वो इन्दर के पास आई, उसकी आँखों में देखते हुए—''तू झूठ बोल रहा है ना?

उसकी आवाज अब काँप रही थी—''हमने साथ जीने की बात की थी, इन्दर तू कैसे एक **'ना'** से हार गया''?

इन्दर चुप रहा।

मेघना की आँखों में सैलाब था।—''देख हम समझाएँगे समय लगेगा, पर सब मान जाएंगे '' ''तू बस साथ दे '' मैं सब ठीक कर दूँगी ''

पर इन्दर अब अपने झूठ के पीछे अडिग खड़ा था क्योंकि यही उसकी सच्चाई बन चुकी थी।—''नहीं मेघना '' उसने धीरे, पर स्पष्ट कहा—''अब हमारे बीच कुछ भी संभव नहीं हैं।

बस यही वो वाक्य था, जिसने उनके पूरे प्रेम को एक पल में शून्य कर दिया। मेघना की आँखों में दर्द अब गुस्से में बदलने लगा—''जब संभव नहीं था तो किया ही क्यों प्यार?'' ''क्यों दिखाए इतने सपने? क्यों बनाया मुझे अपनी आदत अपनी जिंदगी?

मेघना इन्दर के कंधों पर लाचारी से हाथ रखते हुए बोली—इन्दर! हमारा रिश्ता किसी हाँ या ना का मोहताज नहीं हैं। पता है मैं तेरी प्रेमिका नहीं, पत्नी हूँ इन्दर। हमने तेरे बर्थ—डे पर शादी की थी ना, तून्हें लगाया था ना सिंदूर, भूल गया तू, बोल ना। मेघना इन्दर पर गुस्से से झपते हुए बोल रही थी।

पर इन्दर निरूत्तर खड़ा रहा। वह चुपचाप सुनता रहा, हर शब्द उसके सीने में उतरता गया। पर उसने कोई सफाई नहीं दी। क्योंकि सफाई देना उसके वादे के खिलाफ था।

''कुछ मत कहो '' वो धीमे से बोला—''बस यहीं खत्म करते हैं।''

मेघना एक पल के लिए स्तब्ध रह गई—''इतनी आसानी से?''

''मेरे लिए भी ये आसान नहीं है, मेघना ''। इन्दर के शब्द टूट रहे थे–''पर शायद सही यही हैं।''

मेघना ने उसे आखिरी बार देखा–उस नजर में प्यार भी था, सवाल भी और अंत भी।

''आज के बाद '' उसने धीमे से कहा–''मुझसे कभी मिलने की कोशिश मत करना।'' और वो मुड़ गईं। इन्दर वहीं खड़ा रह गया–**जैसे कोई अपनी ही दुनिया के खंडहरों के बीच खड़ा हो।**

उस दिन दो लोग अलग नहीं हुए

एक पूरा संसार बिखर गया–

उसी ने एक पिता का सपना बचाया,

और उसी ने अपना जीवन खो दिया ''।

इन्दर मुझे कभी मत मिलना। मेघना के शब्द अभी भी इन्दर के कानों में गुँज रहे थे। उस रात नींद दोनों की आँखों से कोसों दूर रही। मेघना तकिये में मुँह छुपाकर रोती रही। उसे बार बार वही प्रश्न काट रहा था –

''अगर प्रेम इतना कमजोर था तो शुरू ही क्यों किया?''

और इन्दर छत को ताकते हुए, अपने ही फैसले के नीचे दबता रहा। उसकी आँखें सूख चुकी थीं, पर भीतर एक समंदर लगातार टूट रहा था। **उसने कई बार फोन उठाया पर हर बार मेघना की माँ के जोड़े हुए हाथ उसकी आँखों के सामने आ जाते।**

सुबह हुई–पर उजाला किसी के भीतर नहीं उतरा।

अचानक इन्दर का फोन बजा–स्क्रीन पर फिर वही नाम था–मेघना।

उसने काँपते हाथों से कॉल उठाई।

दूसरी तरफ बहुत देर तक खामोशी रही। फिर धीमी आवाज आई–''एक बार मिलो प्लीज।

मेघना अपने प्रेम के लिए हर संभव अपनी आखिरी कोशिश कर लेना चाहती थी।

जब वो मिले, तो दोनों के बीच पहले जैसा कुछ भी नहीं था–ना वो निश्चित हँसी, ना सपनों से भरी बातें।

अब उनके बीच सिर्फ दर्द बैठा था—चुपचाप।

मेघना कभी उसे समझाने लगती—''देखो सब ठीक हो जाएगा''। कभी खुद ही रो पड़ती—''तुम ऐसा नहीं कर सकते ''

पर इन्दर की खामोशी मेघना को तोड़ते जा रही थी।

अगले कुछ दिनों तक, मेघना पूरे जयपुर में जैसे इन्दर के साथ अपने प्रेम को ढूँढती फिरती रही।

वो मंदिरों में जाती धागे बाँधती मन्नतें माँगती।

''भगवान बस उसे मुझे वापस दे दो।''

हर मंदिर में उसकी आँखें भीग जाती। हर प्रार्थना में इन्दर का नाम होता।

पर इन्दर सब जानते हुए खामोशी से उसे बस देखता रहा। कभी दूर खड़े होकर उसे देख लेता, कभी चुपचाप उसके साथ मंदिर तक चला जाता। पर अब उसके पास उसे देने के लिए कुछ नहीं था—सिवाय एक झूठी दूरी के।

''हर मंदिर वह मेघना के साथ चलता रहा, पर मेघना की जिंदगी में उसके साथ नहीं चल पाया।''

धीरे—धीरे मेघना थकने लगी। उसकी आवाज में अब शिकायत कम, हार ज्यादा सुनाई देने लगी। बातें कम हो गईं। धीरे धीरे कॉल छोटे होने लगे। और एक दिन उसने समझ लिया कि शायद अब इन्दर सच में जा चुका हैं।

उधर इन्दर भी जयपुर में घुटने लगा था। वो सड़कें, जहाँ कभी दोनों साथ चले थे अब उसे काटने लगीं। हर चाय की थड़ी, हर मंदिर, हर मोड़ मेघना की याद बनकर उसके सामने खड़ा हो जाता। और इन्दर की आँखें वहीं खड़े खड़े अपने स्मृतियों को याद करते नम हो जाती। **इन्दर के लिए जयपुर अब शहर नहीं रहा—एक जिंदा स्मृति बन गया।**

आखिरकार इन्दर ने गाँव लौट आने का फैसला लिया। और वहाँ जाकर उसने खुद को धीरे धीरे पूरी तरह मेघना से काट लिया। कॉल, मैसेजेज कम होते गए, पर इन्दर का दर्द बढ़ता जा रहा था।

इसी बीच एक दिन आर ए एस इंटरव्यू नजदीक आ गया। मेघना अपने आसूँओं को समेटने की नाकाम कोशिश के साथ इंटरव्यू की तैयारी में जुट गईं। दूसरी और इन्दर पूर्णतया खाली हो चुका था। इन्दर भी इंटरव्यू की तैयारी में लगने की कोशिश करता रहा पर उसे मेघना के विछोह अलावा कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था।

आखिरकार इन्दर ने एक दिन तय कर लिया–वो इंटरव्यू नहीं देगा। और स्टेड़ी को हमेशा हमेशा के लिए त्याग देगा।

"जिस मंजिल तक पहुँचकर भी वो साथ ना हो उस मंजिल का क्या करना।"– इन्दर ने खुद से कहा।

और सच में–इंटरव्यू के दिन वो नहीं गया। उस दिन हजारों लोग अपने सपनों के लिए लड़े पर इन्दर अपने ही सपनों से हार गया।

जब सोनम को इस बात का पता लगा कि इन्दर ने इंटरव्यू नहीं दिया तो उसने इन्दर को तुरंत कॉल किया और जैसे तैसे जयपुर आने के लिए मना लिया।

इन्दर अगली सुबह जयपुर जा पहुँचा।

आसमान पर धूसर रंग ऐसे फैल रहा था जैसे इंदर के मन की उदासी ने आकाश से समझौता कर लिया हो। इन्दर सोनम के बताई जगह पर पहुंचा। कोने में पड़ी एक चेयर पर जाकर खामोशी से बैठ गया। ना उसने सोनम को कॉल किया, ना कुछ और।

सोनम चुपचाप पास आकर बैठ गई। कुछ देर तक उससे कुछ कहा न गया। **कभी–कभी सबसे गहरी संवेदनाएँ मौन में ही सांस लेती हैं।**

तुम पढ़ नहीं रहे?–सोनम ने बहुत हल्के स्वर में कहा, **जैसे शब्द नहीं, चिंता रख रही हो।**

इंदर की आँखे भर आईं। वो एक बार फिर रोया नहीं, बस चुपचाप टूट गया। आवाज नहीं आई पर आत्मा रिस गई।

सोनम–इंदर तुम आजकल खुद से भी बात नहीं करते। पढ़ाई छोड़ देना कोई छोटी बात नहीं हैं। तुम ऐसे हार नहीं मान सकते।

इंदर–हार तो उस दिन मान ली थी सोनम, जिस दिन हमने अपनी मजबूरियों के आगे अपने प्रेम को झुका दिया।

अब किताबें क्या ही जितायेगी, जब मैं अपनी दुनिया हार चुका।

सोनम–इन्दर, तुम तो कहा करते थे, ऐसा कोई एग्जाम बना ही नहीं जो इन्दर हो असफल कर सके। तो फिर क्या हुआ? और तुम्हारा सपना सिर्फ किसी एक इंसान से नहीं जुड़ा था। तुम्हारा सपना तो तुम खुद थे ना इन्दर। उसे तो मत खाओ।

इंदर–सोनम मैं आज भी नहीं हारा। देखो न मैंने समाज रूपी इतने बड़े एग्जाम को पास कर लिया।

सोनम–अगर मेघना तुम्हें आज देख ले, तो क्या वो खुश रह पाएगी?

इंदर–मैं नहीं चाहता कि मेरी हार उसका बोझ बने। **वो हँसे बस यही मेरी आखिरी जीत हैं।**

सोनम–तो जीयो इंदर। ताकि उसका हँसना झूठ न लगे। और **कुछ लोग हमेशा के लिए नहीं आते, लेकिन हमें हमेशा के लिए थोड़ा बेहतर इंसान बना जाते हैं।**

इंदर–मैं उसके बिना जीना नहीं सीख पा रहा हूँ सोनम। (इंदर की आवाज रूक–रूक कर आ रही थी। ऐसे लग रहा था उसकी हर साँस पुराने वादो से टकराकर टूट रही हो।)

सोनम चुप रही। क्योंकि **कुछ वाक्य तालियों के नहीं, सन्नाटे के हकदार होते हैं।** सोनम अब और देख नहीं पाई। वो आगे बढ़ी, कोई सवाल नहीं किया, कोई उपदेश देना उसे अब उचित नहीं लगा। उसने इंदर को अपनी बाँहों में बुलाया और कसकर भर लिया।

इंदर का सिर सोनम के कंधे पर झुक गया। उसकी देह काँप रही थी। आँसू बह नहीं रहे थे, पर भीतर सब बह चुका था। सोनम ने उसे थामे रखा। बहुत शांत। बहुत दृढ़।

रो लो, आज तुम्हें मजबूत नहीं बनना।–सोनम ने हल्के स्वर में कहा।

इंदर की उँगलियाँ उसकी पीठ में सिमट गईं। वो पहला क्षण था जब उसने हार को छुपाया नहीं। उसकी सिसकियाँ सोनम की चुप्पी में घुलती रहीं।

सोनम जानती थी–**यह आलिंगन प्रेम नहीं, यह उससे भी बड़ा हैं। यह वो जगह है जहाँ इंसान टूटकर भी सुरक्षित होता हैं।**

इस आलिंगन ने इन्दर में जिंदा रहने की थोड़ी सी ताकत वापस ला दी। सोनम भी समझती थी–**कभी–कभी इंसान को समझदारी की नहीं दो शांत बाँहो की जरूरत होती हैं।**

इंदर और सोनम की दोस्ती में वादे नहीं थे, बस मुश्किल वक्त में एक दूसरे के पास बैठ जाने की आदत थी। **जब सारा संसार सवाल बन गया तो सोनम की दोस्ती वो चुप्पी बन गई जिसने इन्दर को टूटने नहीं दिया।**

इन्दर को मेघना का मिलना उसका भाग्य था, पर सोनम का मिलना उसका सौभाग्य।

सोनम इन्दर के मनोभावों को देखते हुए स्टेड़ी से हटकर बस उसे सहारा देने में लग गईं। इन्दर को उस दिन सोनम की बाहों में एक शांति सी मिली। सोनम से मिलने के बाद वह वापस लौटने लगा।

पर वापस लौटते समय जयपुर की सड़कों पर इन्दर चल तो रहा था पर उसकी आँखें वर्तमान में नहीं थी। उसकी ऑखों के सामने दृश्य थे–यहाँ मेघना कभी हाथों में हाथ डाले चलती थी, यहाँ दोनों चाय की थड़ी पर चुसकियाँ लेते ठहाके लगाते थे। यह वहीं लाइब्रेरी है, जहाँ उन्होंने सपने देखे थे।

और तभी एक तेज हॉर्न एक झटका और सब कुछ बिखर गया। इन्दर का एक्सीडेंट हो गया। चोट गंभीर नहीं थी–बस पैर में फ्रैक्चर था। पर सच तो ये था–**जो सबसे ज्यादा टूटा था, वो उसकी आत्मा थी।**

सोनम दौड़ती हुई अस्पताल पहुँची–फिर से वही दृश्य वही सफेद दीवारें बस किरदार बदल गए। कभी मेघना के पिता थे, आज इन्दर था। सोनम ने इन्दर को देखा तो उसे लगा–ये लड़का अब दर्द महसूस करना भी छोड़ चुका हैं।

होश में आते ही इन्दर ने धीमे से कहा–''अब मैं जयपुर कभी नहीं आऊँगा''।

सोनम को उसके पागलपन पर गुस्सा और हंसी दोनों साथ आ रही थी।

इन्दर दर्द में जीने लगा। उधर मेघना टूटे मन से अपने घर वालों से अपनी शादी की बातें सुन रही थी। समय बीतता रहा। फिर एक दिन फाइनल रिजल्ट आया–

मेघना एस डी एम बन गई।

सोनम को सीडीपीओ मिला।

दोनों ने अपनी मंजिल पा ली। पर इन्दर अभी भी हमेशा हमेशा के लिए अपनी मंजिल भूला के जी रहा था।

शादी के दिन की मुलाकात

एसडीएम बन जाने के बाद मेघना की सगाई एक अच्छे घराने में हो गई। 29 फरवरी को शादी की तारीख फिक्स हुई। घर में खुशियों की हलचल थी। रिश्तेदार, तैयारियाँ, गीत, रोशनी सब कुछ था। बस एक चीज नहीं थी–मेघना के मन की खुशी। यह वैसा ही माहौल था जैसे–मुस्कान चेहरे पर सजी तो है, पर दिल तक नहीं पहुँच रही। उधर गाँव में, इन्दर अपनी छोटी सी दुनिया में खुद को सीमित कर चुका था। उसने जयपुर, सपने, किताबें, सब पीछे छोड़ दिए थे।

तभी एक शाम उसका फोन बजा।

स्क्रीन पर नाम उभरा–''मेघना''

इतने समय बाद भी, उस एक नाम में उसकी पूरी धड़कन बसती थी। उसने काँपते हाथों से कॉल उठाया–फिर वही आवाज पर थोड़ी थकी हुई।

''कैसे हो, इन्दर?

इन्दर ने आँखें बंद कर लीं। **कुछ आवाजें वक्त के बाद भी दिल को वहीं ले जाती हैं, जहाँ से इंसान कभी लौट नहीं पाता।**

''ठीक हूँ ''–इन्दर ने मुश्किल से कहा।

मेघना भी शायद खुद को संभाल रही थी। फिर धीमे स्वर में बोली–''मेरी शादी तय हो गई हैं ''

ये शब्द सुनते ही इन्दर के भीतर जैसे फिर कुछ चुपचाप टूट गया। हालांकि वो जानता था–एक दिन ऐसा होगा। फिर भी कुछ सच्चाइयाँ जानने के बाद भी सहन नहीं होतीं।

इन्दर ने होंठ भींच लिए–बहुत बहुत बधाइयाँ, मेघा।

कुछ पल दोनों चुप रहे। फिर मेघना ने धीमे स्वर में कहा–''तुम आओगे ना मेरी शादी में?''

इन्दर जैसे चौंक गया। उसने तुरंत कहा–''नहीं–मेरा आना ठीक नहीं होगा।''

क्यों?–मेघना की आवाज हल्की कांपी।

''बस नहीं आ पाऊँगा ''–इन्दर ने कहा। (असल में इन्दर उस दृश्य की कल्पना नहीं कर पा रहा था–जिस लड़की को उसने अपनी दुआओं में माँगा था, उसे किसी और के नाम होते हुए देखना)

मेघना–''इन्दर क्या हमारा रिश्ता इतना भी नहीं बचा कि तुम मेरी जिंदगी के सबसे बड़े दिन पर मेरे लिए खुश हो सको?''

इन्दर की आँखें भर आईं। वो कुछ कहना चाहता था, पर शब्द गले में अटक गए।

मेघना फिर बोली–''तुम जानते हो मैंने तुम्हें कभी अपने जीवन से अलग माना ही नहीं ''

''हाँ रिश्ते बदल गए

पर कुछ लोग कभी पराये नहीं होते ''

सच्चा प्रेम खत्म नहीं होता, वो बस अपना नाम बदल लेता हैं।''

इन्दर अब भी चुप था।

''तुम आओगे तो मुझे हिम्मत मिलेगी ''

उसकी आवाज अब भावुक हो चुकी थी।

वरना पूरी शादी में मुझे यही लगेगा कि मेरी जिंदगी का एक हिस्सा कहीं अधूरा रह गया ''

इन्दर ने आँखें झुका लीं। हर शब्द उसके भीतर उतर रहा था।

''देखो ''

मेघना हल्की मुस्कान के साथ बोली–''मैं तुम्हें रोक नहीं पाई पर कम से कम अपनी शादी में बुलाने का हक तो मत छीनो।''

इन्दर की पलकों से आँसू गिर पड़े। उसे लगा–वो लड़की, जिसे उसने खुद से दूर कर दिया, आज भी उसी अपनेपन से उसे पुकार रही हैं।

''आओगे ना इन्दर?''–मेघना के इन शब्दों की मार्मिकता इतनी गहन थी कि इन्दर हाँ के अलावा कुछ नहीं बोल पाया।

मेघना की जिद्द के आगे इन्दर हारकर, न चाहते हुए भी शादी वाले दिन मेघना के घर जा पहुँचा। जब मेघना की माँ ने उसे देखा तो पास आके बोली—''इन्दर मेघा, अपने कमरे में हैं। जाके मिल आओ एक बार।

इन्दर मेघना के कमरे में गया। इन्दर कुछ पल तक मेघना को देखता रहा जैसे आँखों में कैद कर लेना चाहता हो और शायद इसलिए भी वह निहारता रहा कि उसे फिर कभी मौका नहीं मिलेगा। **बाहर शहनाई की गूँज थी और अन्दर खामोशी सा सन्नाटा।**

कुछ हिम्मत करके इन्दर (धीमे स्वर में)—मैंने तुम्हें कभी अपनी जिद्द नहीं बनाया पाया शायद इसी वजह से आज तुम किसी और की दुल्हन हो।

मेघा (काँपते हुए)—''अगर जिद्द बनाते तो शायद आज **हाथों में यह कंगन नहीं तुम्हारा हाथ होता इन्दर।**

इन्दर (बात को टालते हुए)—देखो ना मेघा मेंहदी में कितने प्यारे लग रहे हो आप। और देखो यह चुड़ियाँ कितनी प्यारी हैं ना।

मेघा—पता है इन्दर मुझे यह पता नहीं था **मेंहदी का रंग कभी कभी पसंद से नहीं मजबूरी से भी चढ़ता हैं।** इन्दर मुझे इन चुड़ियाँ की आवाज पहली बार चुभ रही हैं। मेंहदी की यह महक पहली बार दम घोटने पर तुली हैं।

इन्दर ने मेघा के ललाट को चुमते हुए कहा—मेघा मैं तुम्हारी कहानी का विलेन रहा। चाहकर भी मैं तुमसें वफाई न कर सका।

मेघा ने इन्दर के होठों पर अँगुली रखते हुए कहा—चुप! एक दम चुप! **तू मेरा खुदा हैं इन्दर। मेरी नजरों में तुझसे ऊपर कुछ हैं भी नहीं।** यह कहते हुए मेघा की पलकें नम हो चुकी थी।

इन्दर—मेघा प्लीज रोना मत! तू रोई तो मैं भी रो दूँगा। **हर मंदिर में माथा टेक के भी मैं तेरा नहीं हो सका। खुदा कभी था ही नहीं मेघा।**

मेघा—अगर खुदा होता तो तुझे मुझसे अलग नहीं करता। और माँगने से सब मिल जाता तो मैं खुदा से इकलौती चीज तुझे मांगती इन्दर। पर सब वैसा नहीं है जैसा मैंने चाहा। **यह मेघा तेरे नाम का सिंदूर लगाती रही, पर तुझे ना पा सकी।**

इन्दर—कितना सुन्दर होता ना अपना संसार मेघा। वो संसार जिसके हमने एक साथ सपने देखे थे।

(थोड़ी देर की खामोशी बाद)

इन्द्र–पर सच यह भी हैं कि आज मेरा संसार मतलब मेरी मेघना भी खूबसूरत लग रही है इतनी कि नजरें हटाने में दर्द हो रहा हैं।

मेघा–**यह सजावट हैं इन्दर, खुशी नहीं।** ये काजल, ये लाल जोड़ा, ये महेंदी सब तुझे ढूँढ रहीं हैं इन्दर। और देख यह चुड़ियों की खनखनाहट। **यह चूड़ियों की नहीं तेरी मेघना के टूटने की आवाज हैं इन्दर।**

इन्दर के लिए खुद को संभालना मुश्किल हो गया था। उसने हल्की भारी आवाज में कहा–मेघा! मैं चाहता हूँ तू हमेशा खुश रहे, अपने होने वाले पत्ति के साथ।

इन्दर खुश तो तुम भी बहुत रखते थे।–मेघना ने सहसा स्वर में कहा।

तभी शादी में आये कुछ मेहमान मेघना के कमरे में आ जाते हैं। और मेघना और इन्दर की यह मुलाकात भी अधूरी छूट जाती हैं। इन्दर मेघना की तरफ देखते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ चला। तभी मेघना ने कहा–

इन्दर शादी की अंतिम रस्म तक यहीं रूकना हैं और बिना खाना खाये मत जाना प्लीज।

इन्दर के मन में उठे सैलाब को इन्दर के लिए संभाल पाना मुश्किल होता जा रहा था। इन्दर शादी के उस माहौल ने निकला और सीधा अपने गाँव आ गया।

पायल नहीं शराब

शादी के बाद जब मेघना पहली बार अपने नए घर की चौखट पर उतरी, तो **सबने उसकी आँखों में एक नई दुल्हन का संकोच देखा पर किसी ने उसके भीतर की उस खामोशी को नहीं देखा, जो किसी श्मशान की राख की तरह ठंड़ी और बेजान हो चुकी थी।**

घर रोशनी से भरा था। रिश्तेदारों की हँसी, शुभकामनाएँ, नए रिश्तों की आवाजाही सब कुछ वैसा ही था जैसा हर विवाह के बाद होता हैं। बस मेघना वैसी नहीं थी।

हालांकि मेघना का पत्ति विनय अच्छा इंसान था। उसकी बातों में नरमी थी, व्यवहार में धैर्य। वो मेघना को समझने की कोशिश करता, उसकी चुप्पियों को भी सम्मान देता। लेकिन मेघना वो अब भी अपने भीतर कहीं जयपुर की उन गलियों में अटकी हुई थी, जहाँ उसने कभी इन्दर के साथ भविष्य के सपने देखे थे।

पहली रात जब कमरे में सिर्फ दोनों थे, विनय ने धीरे से उसका हाथ थामना चाहा। पर मेघना जैसे सहम गई। उसने अनायास अपना हाथ पीछे खींच लिया।

विनय ठिठक गया।

उसने बस इतना कहा–''अगर तुम असहज हो तो कोई बात नहीं।''

उस रात विनय सो गया पर मेघना पूरी रात जागती रही। खिड़की से आती चाँदनी में उसे बार बार वही चेहरा दिखाई देता रहा–इन्दर। उसे याद आता रहा–इन्दर का वो स्पर्श, जिसमें अधिकार कम और अपनापन ज्यादा होता था। वो खामोशियाँ, जिनमें प्रेम धड़कता था। मेघना ने उस रात महसूस किया कि–

शरीर समय के साथ आगे बढ़ सकता है पर मन नहीं। मन जिस स्पर्श को प्रेम मान ले, उसके बाद बाकी सारी नजदीकियाँ सिर्फ औपचारिक लगने लगती हैं।

दिन बीतते गए। विवाह को समय होने लगा। विनय ने कभी जल्दबाजी नहीं की, कभी शिकायत नहीं की। वो मेघना को हर संभव सहजता देने की कोशिश

करता रहा। लेकिन मेघना के भीतर एक अजीब सी घुटन लगातार पनप रही थी।

वो हर रोज खुद को समझाती–''अब यही मेरा जीवन है '' पर हर रात, उसका मन उसी अतीत की ओर लौट जाता जिसे उसने खुद अपने हाथों से खोया था।

जब भी वो विनय के साथ सामान्य होने की कोशिश करती, उसके भीतर यादों का एक तूफान खड़ा हो उठता। ओटीएस में ट्रेनिंग, और बाद में उदयपुर में एसडीएम पोस्ट पर पोस्टिंग के बाद तक भी मेघना सामान्य नहीं हो पा रही थी।

पोस्टिंग के बाद, मेघना ने खुद को पूरी तरह काम में झोंक देना चाहा ताकि वो इन्दर को भूला सके। उसकी आवाज में प्रशासनिक दृढ़ता आ गई थी। **लोग उसे एक मजबूत अधिकारी के रूप में देखते थे। पर किसी को नहीं पता था–कि वही लड़की रात को अपने कमरे में लौटकर घंटों चुप बैठी रहती हैं।** भीड़ के बीच भी, वो लगातार अकेली होता जा रही थी।

कभी–कभी सबसे ज्यादा अकेले वही लोग होते हैं।

जो दिनभर सबसे ज्यादा लोगों से घिरे रहते हैं।

धीरे–धीरे मेघना ने अपनी खामोश रातों का सहारा शराब को बना लिया। वो हर घूंट में शायद इन्दर की यादों को डूबोना चाहती थी, पर जितनी शराब उतरती, इन्दर उतना ही गहरा उसके भीतर उतर जाता।

आज भी मेघना ऑफिस से आते ही प्रोफेशनल कपड़ों की जकड़ से खुद को आजाद करके घर के टेरिस पर जा पहुँची। हाथ में शैम्पेन की बोतल आज फिर साबित कर रही थी कि पायल नहीं कुछ और बजेगा।

इन्दर ने मेघना को यह कहते हुए **कभी पायल दी थी जब भी वह चलेगी तो इन्दर का इश्क गुंजेगा। पर आज इन्दर का इश्क कम और शराब की बोतलें ज्यादा गुंज रही थी।**

नौकर की कदमों की आहट ने मेघना का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।

नौकर–मैम साहब! बहुत ज्यादा हो गई हैं। चलिए उठिए, खाना खा लीजिए। नौकर ने जैसे ही मेघना को संभालने के लिए उसका हाथ पकड़ना चाहा, मेघना ने तेज स्वर में कहा–छोड़ों मुझे, मेघना को संभालने का हक सिर्फ इन्दर को हैं। फिर मेघना लड़खड़ाते हुई खड़ी हुई, आसमाँ की तरफ देखते हुए चिल्लाई–

रंजिश ही सही दिल ही दुखाने को आ।
आ फिर से मुझे एक बार छोड़ के जाने को आ।

इस तरह मेघना की हर रात एक घुटन से कम नहीं थी।

यहाँ तक कि जब मेघना उदयपुर से कोटा अपने पत्ति विनय के पास जाती तो उसे और ज्यादा असहज महसूस होने लगता। विनय उसका बहुत ख्याल रखता—उसकी पसंद का खाना, उसकी थकान, उसकी चुप्पी सब समझने की कोशिश करता। पर **मेघना की लड़ाई विनय से नहीं थी। वो उस प्रेम से हार रही थी, जो इन्दर से उसने पाया।**

मेघना और इन्दर के अलग हो जाने के बाद फर्क इतना सा था कि इन्दर के पास सोनम सा सच्चा दोस्त था जो हर कदम पर उसे संभाल रही थी, सहारा दे रही थी और सोनम बेखूबी यह जानती थी कि इन्दर के मनोभाव को कैसे बदलना हैं।

पर मेघना ने खुद को अकेला पाया।

(एक तरफ जहाँ उदयपुर में शराब की बोतलों की गुंज थी, उसी शाम कैफे की खिड़की से बाहर बारिश की हल्की बूदें गिर रही हैं। इन्दर और सोनम आमने—सामने बैठे हैं। चाय ठंडी हो चुकी हैं।)

सोनम—तुम्हारी आँखे बहुत कुछ कह रही है इन्दर मगर होंठो ने जैसे कसम खा रखी हो न बोलने की। खामोशी का इतना तुफान ठीक नहीं इन्दर।

इन्दर—कहने को कुछ बचा भी हैं क्या सोनम। जिसे सब कुछ कहना था उसे तो चुपचाप छोड़ आया।

सोनम—छोड़ आया या या हालातों ने छीन लिया?

इन्दर—मजबूरी का नाम देकर खुद को तसल्ली दे लेता हूँ, पर सच यह है—मैंने उसका हाथ बीच सफर में छोड़ दिया।

सोनम—इश्क बहुत बुरा होता है ना इन्दर! कभी किसी को नहीं करना चाहिए।

इन्दर—इश्क कभी गलत नहीं होता, इश्क के किरदार प्रेमी गलत होते हैं। और हमारे इश्क में इन्दर गलत था।

सोनम—इन्दर खुद को गलत मत समझो। वैसे भी कुछ रिश्ते आवाज से नहीं, खामोशी से जिंदा रहते हैं। और तेरी खामोशी में वो हमेशा जिंदा रहेगी।

इन्दर–हॉ सोनम। इन्दर में मेघा हमेशा जिंदा रहेगी।

यह जरूरी नहीं कि जो ना मिल सके उसे छोड़ दिया जाये।

पर मेघा को मैंने सच्चे आँसू दिये। **उसके आँसू सच्चे थे, और मेरी खामोशी कायर।**

सोनम–इन्दर जिंदगी भावों से नहीं, जीने की वजह से चलती हैं। इसलिए जिंदगी का अंतिम लक्ष्य निर्धारित करो और जी लो।

इन्दर–अंतिम लक्ष्य? मेरा एकमात्र लक्ष्य मेघना थी। उसके बिना ना अकेले चलने की हिम्मत है, ना ही मन। **एक शख्स की ही तो बात थी, सारी दुनिया किसे चाहिए थी।**

सोनम–कुछ तो लक्ष्य बनाना ही पड़ेगा ना इन्दर। जिंदगी बिना मोटिव नहीं चलती। जिंदगी किसी न किसी दिशा में तो चलनी ही हैं।

इन्दर–मेरी अंतिम दिशा भी वही हैं। मैं उसके बाद भी उसके साथ चलूँगा, जब कभी थक जाऊँगा तो सोचूँगा–अगर वो आज मुझे देख रही होती, तो क्या मुझे हारते देख पाती?

सोनम–मतलब तुम्हें उसे पा लेने की चाहत अब भी हैं।

इन्दर–नहीं। मैं उसे पा लेने के लिए नहीं जीऊँगा, मैं उसे खोकर उसकी तरह बेहतर इंसान बनने के लिए जीऊँगा। इन्दर के अंदर मेघना हमेशा जिंदा रहेगी। उसकी खामोशी में, उसके व्यवहार में, उसके सपनों में।

सोनम–इन्दर। तुम्हें लगता भी हैं। तुम तुम हो। याद करो तुम क्या थे, मेघना के मिलने से पहले और अब क्या हो। कभी कभी तुमसे मिलके लगता है, मैं इन्दर से नहीं मेघना से मिल रही हूँ।

इन्दर–तो क्या गलत हैं।

सोनम दो लोग जब एक दूसरे की तरह बोलने, दिखने और होने लगें तो समझिए बस यही प्रेम है। इसे ही शायद प्रेम में रंग चढ़ना कहते हैं।

वैसे भी प्यार वन वे होता हैं। **इश्क सिर्फ जन्म लेता हैं, उसकी मृत्यु नहीं होती।** दुनिया की एकमात्र चीज प्रेम है **जो शाश्वत है, सनातन है और सत्य भी।** मेघा के प्यार का जन्म मेरे भीतर हुआ, पर अंत कभी नहीं होगा। फिर चाहे वो प्यार मेरे अंदर मेरी खामोशी बनकर रहे या शब्द बनकर दुनिया के सामने आए।

सोनम—शब्द बनकर सामने आये मतलब। इन्दर खुली किताब बनना ठीक नहीं। **माना तुम खुली किताब हो सकते हो पर दुनिया अनपढ़ हैं इन्दर, नहीं पढ़ पायेगी।**

इन्दर—पढ़ने का पता नहीं, पर इन्दर यदि किताब बनकर दुनिया के सामने आया तो दुनिया हिल जरूर जायेगी। ना चाहते हुए भी महसूस होगा उन्हें इन्दर। जो समाज इन्दर से उसकी मेघना छीन लेता हैं, उसने एक भी इन्दर को उसकी मेघना दिला दी तो इन्दर के शब्दों की कामयाबी रहेगी।

मेघना—तुम हमेशा से पागल रहे हो इन्दर।

इन्दर—क्या इतना भी हक नहीं! एक इंसान के लिए पागल हो लूँ।

इतने मैं पास ही के मंदिर में बजती घंटी ने इन्दर को भावों से भर दिया। इन्दर कुछ बोल पाता इससे पहले ही सोनम उसकी मनोदशा समझ चूकी थी। इन्दर कुछ बोलता उससे पहले की सोनम बोल पड़ी—वो बड़ी बड़ी पानी पतासी की बहुत याद आ रही हैं, इन्दर। तू मुझे खिलायेगा ना। और वो दोनों पानी पतासी खाने को चले जाते हैं।

झीलों का शहर उदयपुर

एक दिन जब मेघना की घुटन असहनीय हो गई तो उसने जैसे तैसे इन्दर को उदयपुर मिलने के लिए बुला लिया। उदयपुर की वह रात असामान्य रूप से शांत थी। फतेहसागर झील के पानी पर शहर की रोशनियाँ काँप रही थीं—जैसे किसी ने टूटे हुए सपनों को पानी में उतार दिया हो। दूर पहाड़ियों से आती ठण्ड़ी हवा किनारे पर बनी एक होटल की बालकनी में बैठे इन्दर और मेघना को एक दूसरे की अनुभूति करा रही थी। इन्दर और मेघना काफी समय बाद आमने—सामने बैठे थे।

समय ने दोनों को बदल दिया था। चेहरों पर उम्र की हल्की गंभीरता आ गई थी, पर आँखों में अब भी वही अधूरा प्रेम साँस ले रहा था। टेबल पर रखी चाय कब की ठंड़ी हो चुकी थी, पर दोनों में से किसी ने उसे छुआ तक नहीं क्योंकि उस रात, दोनों अपने भीतर के दर्द को पी रहे थे।

मेघना खड़ी हो झील को देखने लगी, इन्दर उसके पास खड़ा हो मेघना को।

हवा बार बार मेघना के खुले बालों को इन्दर के चेहरे पर ला रही थी, पर इन्दर उन बालों को हटाने की बजाय महसूस कर रहा था।

आखिरकार लम्बी चुपी के बाद मेघना ने धीरे से पूछा—''तुम खुश हो, इन्दर?''

सवाल छोटा था, पर उसके भीतर पूरी जिंदगी छूपी हुई थी।

इन्दर ने बनावटी मुस्कान के साथ धीरे से कहा—''हाँ''। अब मैं प्यार से ज्यादा माँ को सोच लेता हूँ। माँ—पापा के सपनों के लिए जीने की कोशिश कर रहा हूँ।

मेघना—कौनसे सपने इन्दर। तुम्हारे माँ—पा ने तो कभी अपने बेटे को ऑफिसर बनते देखना चाहा था। और मैंने तो सुना हैं, तुम पढ़ाई त्याग चुके हो।

इन्दर—मुझसे नहीं हो पायेगा मेघा, अब यह सब। जब भी इन सब में वापस लौटना चाहता हूँ, तुम्हें ही सोचता रहता हूँ। तुमसे दूर जाने के लिए, यह छोड़ देना जरूरी था मेघा।

मेघना–इन्दर (मेघना ने इन्दर के दोनों गालों पर हाथ रखते हुए कहा)

''तुम अधिकारी बनोगे इन्दर।''

तुम वो सब पा सकते हो, जो तुमने चाहा हैं, तुम्हारे माँ–पा ने तुम्हारे लिए सपने देखे हैं।

अगले ही पल इन्दर की आँखे भर आईं। इन्दर ने अपने आँसूओं को छुपाते हुए बात बदलनी चाही–''तुम कैसी हो?''

मेघना–''जैसी तुम छोड़ के गए सेम वैसी''।

''सरकारी गाड़ी है नाम है सम्मान है **लोग आगे पीछे खड़े रहते हैं। पर तुम नजर नहीं आते इन्दर।** दिन को काम में खुद को उलझा भी लेती हूँ पर रात को नींद नहीं आती ''

''जानते हो ''

मैंने बहुत कोशिश की तुम्हें भूलने की ''

''पहले काम में खुद को डूबोया फिर रिश्तों में।

''पर कुछ लोग भूलाये नहीं जाते इन्दर

वे इंसान की रूह बन जाते हैं।'' (मेघना इन्दर की कॉलर दोनों हाथों से पकड़ते हुए रोने लगी।)

इन्दर अब टूटने लगा। उसने धीरे से कहा–''मेघना बस करो ''

''क्यों? ''तुम्हें दर्द होता है इन्दर? ''तो सोचो मैंने कैसे जिया होगा ये सब।''–मेघना ने धीमे से कहा। बहुत देर बाद मेघना ने फिर कहा–''इन्दर? ''अगर अगले जन्म में मिले ना ''

उसकी आवाज टूट गई–**''तो मुझे किसी मजबूर आदमी से प्यार मत होने देना ''।**

बस इतना सुनते ही, इन्दर बिखर गया। उसने मेघना का हाथ कसकर पकड़ लिया–जैसे वर्षों से रोका हुआ दर्द उसकी उँगलियों से बाहर आ गया हो।

हवा अब और ठंडी हो गई थी। मेघना ने अपना सिर इन्दर के कंधे पर रख दिया। मेघना के काँपते हुए हाथों को देख इन्दर ने मेघना को गोद में उठाया और बेड पर ले गया।

मेघना बेड पर भी इन्दर के कंधे पर सिर रखते हुए बोली **"बहुत थक गई हूँ, इन्दर"**

इन्दर ने कुछ नहीं कहा। बस उसके सिर पर हाथ फेरता रहा—जैसे किसी बिखरे हुए हिस्से को धीरे धीरे समेट रहा हो।

बातों ही बातों में कब उनके बीच की दूरियाँ पिघलने लगीं, उन्हें खुद भी पता नहीं चला।

बस इतना हुआ कि वर्षों से दबे हुए आँसू,

टूटी हुई यादें

और अधूरी मोहब्बत—धीरे धीरे एक दूसरे के करीब आ गए।

उस रात उनके बीच कोई शोर नहीं था,

कोई आवेग नहीं था।

बस दो बेहद थके हुए दिल थे, जो कुछ पल के लिए एक दूसरे में सुकून ढूँढ रहे थे।

झील के बाहर लहरें किनारों से टकराती रहीं और भीतर, दो अधूरी जिंदगियाँ एक दूसरे में खामोशी से पनाह लेती रहीं। इन्दर ने मेघना को पूर्ण अंतर्मन से महसूस किया और मेघना ने इन्दर के स्पर्श को एक बार फिर अपने भीतर उतार लिया।

उस मुलाकात के बाद इन्दर अपने गाँव लौट आया और मेघना इन्दर के स्पर्श को उदयपुर में महसूस करती रही।

खालीपन भरने की एक कोशिश

सब असामान्य सा चल रहा था। मेघना का सफर कोटा और उदयपुर के बीच कम और अपने और इन्दर के स्पर्श को बस झील किनारे बैठ अकेले महसूस करने तक का ज्यादा था।

कुछ समय बाद मेघना ने एक प्यारे से बच्चे को जन्म दिया। मेघना को लगा कि वो अब ममता के बीच खुद को रख के इन्दर को भूला देगी। अब मेघना ने पूरी कोशिश शूरू की–अपने बच्चे में खो जाने की। वो घंटों उसे सीने से लगाए रखती, उसकी हँसी में खुद को भूलने की कोशिश करती। कई बार रात को बच्चे को सुलाते–सुलाते, वो खुद रो पड़ती।

उसे लगा–शायद मातृत्व उसके खालीपन को भर देगा।

पर कुछ खालीपन ऐसे होते हैं,
जो किसी रिश्ते से नहीं भरते।

दिन गुजरते गए बच्चा बड़ा होने लगा पर मेघना के भीतर की घुटन कम नहीं हुई। अब वो पहले से ज्यादा चुप रहने लगी।

"कुछ लोग जिंदगी में इतने गहरे उतर जाते हैं कि उनके जाने के बाद इंसान सामान्य दिख तो सकता है पर कभी सामान्य हो नहीं पाता।

मेघना की घुटन उसे जीने नहीं दे रही थी। उसने डिसाइड़ किया कि वो आखिरी बार इन्दर से मिलेगी। उसने इन्दर को कॉल किया

इन्दर – हैललल़ो। कैसी हो।

मेघना– हैलो इन्दर। क्या हम मिल सकते हैं, अंतिम बार।

इन्दर – मेघना! क्या हुआ? तुम ठीक तो हो ना।

मेघना – इन्दर प्लीज सवाल मत करो।

मुझे मिलना हैं एक अंतिम बार के लिए!

क्या तुम आ सकते हो प्लीज?

राज – हॉ।

मेघना – 22 जुलाई को शाम 6 बजे प्लीज आ जाना। वहीं अपनी कोल्ड़ कॉफी वाली शाम।

इतना कहने के बाद मेघना ने फोन डिसकनेक्ट कर दिया। पर उस दिन मेघना के शब्द कम और विवशता से भरी भावनाएं ज्यादा थी।

अंतिम मुलाकात

निर्धारित समय पर निर्धारित स्थान पर मेघना के साथ इन्दर की सजी वो शाम दुनिया की सबसे खुबसूरत शाम में से एक थी। कोल्ड़ कॉफी संग अपनी हथेलियों में इन्दर के हाथों की गर्महाहट पाकर मेघना एक बार फिर खुद को दुनिया की सबसे भाग्यशाली औरत होने के एहसास को महसूस कर रही थी।

मेघना ने इन्दर के हाथ को कस के पकड़ते हुए कहा—**सुनो ना! अगले जन्म समय से मिलना। इस जन्म में तो एक जन्म का फासला रह गया शायद। पर अगले जन्म में तुम सिर्फ मेरे होके आना।**

इन्दर ने भी उसके गाल पर प्यार से हाथ रखते हुए कहा—पगली अगला ही नहीं, अगले हर जन्म तेरे संग बिताऊंगा। अगला हर एक जन्म तेरा हैं।

मेघना और इन्दर एक दूसरे में प्यार की खूबसूरती के साथ डूबते जा रहे थे। पर मेघना के भाव आज हमेशा से बहुत अलग थे। मेघना ने अपने पर्स में से सिंदूर की ड़िबियां निकाली और इन्दर से कहा—इन्दर आज अंतिम बार अपने हाथों से मेरी मांग सजा दो कितनी सुनी—सुनी सी लग रही हैं ना। मेघना के यह शब्द भाव विभोर होके निकले थे। यदि इन शब्दों के आगे के कुछ और शब्द होते तो वे मेघना की अश्रुधारा के साथ निकलते।

इन्दर ने भी बिना किसी देरी के अपनी अंगुलियों से बड़े प्यार से मेघना की मांग में सिंदूर सजा दिया और साथ में एक हल्का सा, प्यारा सा चुबंन मेघना के लबो पर दिया।

मेघना के भावों को इन्दर आज समझने में असमर्थ सा था और हमेशा की तरह प्यार में पागल एक बच्चे सा बना रहा। और रहता भी क्यो नहीं, मेघना को हमेशा से ही इन्दर का बच्चा रूप ही पसंद था। आज मेघना बार बार इन्दर को कस कस से पकड़ रही थी जैसे कह रही हो यह पकड़ इतनी मजबूत हो जाये कि कभी छूटे ही नहीं।

काफी समय की चूपी के बाद मेघना ने अपनी आँखों में हल्के आंसू लिए इन्दर को कहा—**इन्दर! आज मैं तुझसे अंतिम बार मिल रही हूँ, आज के बाद मैं कभी**

तुझसे नहीं मिलूंगी। प्लीज अपना ख्याल रखना और मैं याद आ जाऊं तो उदास मत होना, मैं हमेशा तेरे आस पास रहूंगी।

मेघना इतना कहकर इन्दर के दोनों गालों पर अपनी हथेलियों को रख के माथे को चुमते हुए चल दी। इन्दर ने मेघना के जाते समय उसके हाथ की हथेली को पीछे से हल्का सा पकड़ा परन्तु मेघना के आगे जाने के साथ ही वो हाथ छूट गया और मेघना अपने आसूंओ को रोकने की नाकाम कोशिश के साथ बिना पीछे देखे आगे बढ़ गईं।

मेघना के यूं अचानक चले जाने के साथ इन्दर की शायद जिंदगी खत्म हो चली होती। या **इन्दर को पता होता कि वो आखिरी मुलाकात है, तो इन्दर एक बार फिर और उसे कस के गले लगाता।** परन्तु इन्दर आज पहली बार मेघना के भावों को समझ नहीं पा रहा था। उसने अभी तक ही यह स्वीकार ही नहीं किया कि उनकी यह आखिरी मुलाकात हैं। उसे लगा वो फिर मिलेंगे और मिलते रहेंगे। इन्दर मेघना के भावों को समझ पाने में असमर्थ रहा, और वो उसी रात अपने गाँव को लौट आया।

अगले दिन–स्थान : टोंक रोड़, गुलाबी नगरी, जयपुर। दिन : 23 जुलाई, समय : शाम के करीब 6 00 बजे। सड़क पर खून से लथपथ पड़ा एक इंसान, पास में गुलाबी pleasure स्कूटी से चमचमाती लाल लाईट के साथ में एम्बूलेंस की वो आशा से भरी ध्वनि जो कुछ समय पहले निराशा में तबदील हो चुकी थी और चारों तरफ सब बिखरा हुआ एक खौफनाम मंजर। वहाँ खड़ा हर एक इंसान अनजान था कि क्या हुआ है क्योंकि वो नगरी सच में गुलाबी थी, जो किसी के सपनों को आसमान की उस अंतिम सीढ़ी तक ले जाने वाली थी जहां कि उसने कल्पना की थी। वो रोड़ मात्र एक रोड़ नहीं थी बल्कि किसी के सुकून के कुछ कदम थे।

जिस लहू से लथपथ वो इंसान था वो मात्र लहू नहीं बल्कि किसी अपने के ना आने की टूटी आशा था जो बह रहा था एक सलिला की तरह जैसे वो अब भी मिल जाने को आतुर हो उसके अपने शांत सरोवर में। और जो इंसान लथपथ था वो मात्र इंसान नहीं किसी का ममत्व था, किसी का स्त्रीत्व था तो किसी का सारा जहान्।

पर जो वहां पर सबको दिख रहा था वो एक काल्पनिक दृश्य मात्र था, उसकी वास्तिवकता से ना कोई ओत प्रोत था, ना कोई होना चाहता था। दुनिया के चंद दृश्य ऐसे होते है जो सामने है पर वास्तविक नहीं और उन्हीं में से एक

वो था। पर वो दृश्य किसी इंसान के लिए वो मंजर बन जाता है कि 1254 दिन 2 घंटे 58 मिनट और चंद सैंकड़ों के बाद भी वो उसके लिए उसी मंजर के समान रहता है जैसा वो उस दिन था।

हर नदी बह जाने के बाद निशान और हर ऋतु निकल जाने के बाद अपने पतझड़ छोड़ जाती है। पर यह मंजर सदा सलिला सा था जो बहना शुरू तो हुआ पर रूकना नहीं। काश एक दिन पहले के वो मैं ठीक हूँ, के अंदर छुपी अंतर्वेदना को इन्दर समझ पाता, समझ पाता उस यथार्थ की वेदना, पर उस करूण व्यंग्य को जो समझ जाने में उसकी यह असमर्थता थी और उसी ही परिणाम की अंत्येष्टि था यह मंजर। इस कहानी की शुरूआत हुई थी–आज से काफी समय पहले मेघना के खिलखिलाते चेहरे से जो लेकर आया था मच्छर और हैलिकॉप्टर के टक्कर की एक जबरदस्त दास्ता और साथ में लाया था किसी को कायल कर देना का साहस। पर आज उसी कहानी का अंत इस तरह मेघना की मौत के साथ होगा, इन्दर ने अपने सपने में भी नहीं सोचा था।

एक तरफ इन्दर की दुनिया सड़क पर दम तोड़ चुकी थी, दूसरी तरफ इन सब से अनजान इन्दर अपने गाँव में अपने दर्द का मर्म ढूँढने की नाकाम कोशिश करता रहा।

दर्द

01 अगस्त तक इन्दर मेघना की मौत से बिल्कुल अनभिज्ञ था। सोनम की भी हिम्मत नहीं हुईं की वो इन्दर को इस बारे में बता सके। पर फिर 01 अगस्त को इन्दर की फोन स्क्रीन पर एक नाम उभरा–सोनम।

इन्दर ने सहज होने का प्रयत्न करते हुए कॉल उठाया–''हाँ सोनम।''

पर दूसरी ओर कोई उत्तर नहीं था। सिर्फ टूटी हुई साँसों की आवाज थी।

इन्दर का हृदय अनायास धड़क उठा–''सोनम? क्या हुआ?''

बहुत देर तक वहाँ मौन पसरा रहा। फिर जैसे किसी ने भीतर से टूटकर शब्दों को बाहर धकेला हो–''इन्दर '' सोनम की आवाज इतनी भीगी हुई थी कि इन्दर के भीतर अचानक एक भय उतर आया।

''मेघना '' वह आगे कुछ क्षण बोल ही नहीं पाई। और फिर–''मेघना नहीं रही ''

इन्दर का समय उसी क्षण जैसे ठहर गया।

हवा रूक गई। शब्द रूक गए। धड़कनें रूक गईं। इन्दर बहुत देर तक कुछ समझ ही नहीं पाया। मानो उसके कानों ने सुन तो लिया हो, पर आत्मा ने स्वीकार करने से इंकार कर दिया हो।

''क्या?'' इन्दर के काँपते हुए होठों ने पूछा।

दूसरी ओर सोनम फूट पड़ी–''इन्दर 23 जुलाई को उसका एक्सीडेंट हो गया।'' कुछ बोल रहे हैं एक्सीडेंट और कुछ आगे सोनम नहीं बोल पाईं।

इन्दर के हाथ से फोन लगभग छूट गया। उसने पास की कुर्सी पकड़नी चाही, पर शरीर में जैसे शक्ति ही नहीं बची थी। वह धीरे–धीरे जमीन पर बैठ गया।

उसकी आँखें शून्य में फैल गईं।

''नहीं ऐसा नहीं हो सकता ''–इन्दर के होठों से टूटी हुई आवाज निकली। यह कहते इन्दर की साँसे जैसे भीतर ही जम गई।

उसे अचानक फतेहसागर की वह रात याद आ गई। जब मेघना ने कहा था—

"मैं बहुत थक गई हूँ, इन्दर।"

उसे याद आई वो कॉफी वाली शाम जब मेघना ने कहा—

"इन्दर यह हमारी अंतिम मुलाकात हैं।"

इन्दर ने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढँक लिया। उसके भीतर वर्षों से दबा हुआ समूचा दुख आज एक साथ जाग उठा।

उसे लगा—मानो उसकी आत्मा का कोई हिस्सा शरीर से अलग हो गया हो। इन्दर के जीवन के भीतर अब कुछ बचा ही नहीं था। वह बहुत देर तक यूँ ही जमीन पर बैठा रहा। फोन हाथ से छूट चुका था। सोनम की आवाजें आ रही थी पर इन्दर को कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। उसकी आँखों के सामने एक—एक दृश्य लौटने लगा—

वो मच्छर—हैलीकॉप्टर का एक्सीडेंट

वो मंदिर

जयपुर की सड़कें

स्मृति वन

अस्पताल का बरामदा

फतेहसागर की वो रात मेघना के काँपते हाथ।

और वो अंतिम मुलाकात।

और फिर—एक भयानक अंतिम सत्य—मेघना अब नहीं रही।

सोनम की उस फोन कॉल के आगे के इन्दर के कुछ समय के दृश्य को शब्दों में ढाल पाना कभी संभव ही नहीं हैं। कहते है कि—

"कुछ लोग एक पल में मर जाते हैं
और कुछ, वर्षों तक भीतर ही भीतर मरते रहते हैं।

इन्दर का भी बस यहीं हाल था। इन्दर बिल्कुल खामोश हो चुका था। इन्दर जीवित तो था, पर केवल साँसों के अर्थ में। अब वह चलता था, बोलता था, लोगों के बीच बैठता भी था पर **उसकी आँखों में हमेशा एक ऐसा शून्य तैरता रहता, जिसे देखकर यह महसूस किया जा सकता था कि—यह इंसान बहुत पहले मर चुका हैं।**

गाँव में जहाँ इन्दर शरारती था, वहीं आज सबसे ज्यादा समझदार बन चुका था। गाँव के लोग कहते–''इन्दर बदल गया हैं।'' पर कोई नहीं जानता था –

इन्दर बदला नहीं था, वह भीतर से उजड़ चुका था।

कुछ लोग मृत्यु के बाद मिट्टी में दफन हो जाते हैं, पर इन्दर, मेघना के जाने के बाद अपने ही शरीर में दफन हो चुका था।

अब उसका अधिकांश समय गाँव के मंदिरों सूनी खाली जगहों और पुराने बरगद के नीचे बीतने लगा। मानो किसी अदृश्य आहट की प्रतीक्षा कर रहा हो।

कभी कभी अचानक किसी राह चलती लड़की की आवाज सुनकर पलट जाता। कुछ क्षणों तक उसे देखता रहता फिर धीरे से मुस्कुरा देता–जैसे स्वयं को समझा रहा हो कि ''नहीं नहीं'' यह मेघना नहीं हैं।

धीरे धीरे उसकी स्थिति ऐसी हो गई कि वह किसी से भी बात करते–करते भावुक हो उठता। उसे मेघना की कहानी सुनाने लगता। मेघना बहुत अच्छी थी। फिर बिना किसी क्रम के, वह उसकी बातें करने लगता–

कैसे वह मंदिरों में धागे बाँधती थी

कैसे बारिश में भीगते हुए हँसती थी

कैसे गोद में सुलाती थी

कैसे वो इन्दर को समझाती थी

लोग चुपचाप उसे सुनते रहते। पर **इन्दर बात नहीं, बल्कि वह अपने भीतर का शोक उनके सामने बहाता रहता था।**

कई बार वह अचानक किसी का हाथ पकड़ लेता। उसकी आँखे बच्चे की तरह भर जातीं और वह लगभग विनती करते हुए कहता–

''मुझे मेरा मेघना ला दो ना '' ''बस एक बार'' ''मैं उसे फिर कभी नहीं रोने दूँगा।

उसकी आवाज में ऐसा टूटापन था कि सामने वाला व्यक्ति भी रो पड़े।

इन्दर रात को सोता कम और मेघना को सोचता ज्यादा था। वो रात रात भर आसमान में देखता रहता–हर तारें में अपनी मेघना को खोजने की नाकाम कोशिश करता रहता।

कभी अचानक मुस्कुराने लगता–मानो उसे कहीं मेघना दिखाई दे गई हो। और अगले ही पल फूटकर रो पड़ता।

“वह पागल नहीं हुआ था
वह बस उस व्यक्ति को भूल नहीं पाया था,
जिसके बिना उसका अस्तित्व अधूरा था।”

सोनम जब भी उससे मिलती, उसे देखकर भीतर तक काँप जाती। एक दिन इन्दर सोनम के साथ मंदिर गया हुआ था। वहाँ सीढियों पर अकेला बैठ गया। उस समय उसने एक छोटे बच्चे को अपने पिता का हाथ पकड़े देखा।

वह बहुत देर तक उस बच्चे को देखता रहा। फिर अचानक वह हल्का सा मुस्कुराया, पर उसकी आँखों में आँसूओं की चमक साफ दिखाई दे रही थी।

वो मुस्कान इतनी दर्दभरी थी कि पास खड़ी सोनम की आँखें भर आईं।

सोनम ने पास आके इन्दर को कहा–“खुद को संभालो, इन्दर।”

इन्दर ने धीमे स्वर में कहा–“जिसे संभालना था वो चली गई सोनम” “अब यह शरीर बचा हैं, कभी यह भी चला जायेगा।”

मेघना उसे देख समझ चुकी थी कि–

कुछ लोग प्रेम में सिर्फ दिल नहीं हारते
पूरी जिंदगी हार जाते हैं।

पर सोनम हार मानने वालों में से नहीं थी। उसने एक बार फिर उसी बच्चे की ओर इशारा करते हुए कहा–याद है इन्दर। कभी तुम भी अपने पिता के इतने करीब थे। आज उनसे बात करने में तुझे डर लगता हैं। पता है क्यों?

इन्दर ने सोनम की ओर ऐसे देखा जैसे पूछ रहा हो क्यों?

सोनम–इन्दर जो चला गया, उसे बदला नहीं जा सकता। पर जो तेरे माँ–पिता ने तेरे लिए सपने देखे थे, वो अब भी तेरे जीने की वजह बन सकते हैं।

सोनम ने इन्दर को उस दिन खूब समझाने की कोशिश की। पर नाकाम रहीं। और इन्दर गाँव लौट आया।

दोस्त भगवान से कम नहीं

इन्दर की जिंदगी दर्द का पर्याय बन चुकी थी। जब एक दिन उससे रहा नहीं गया तो उसने सोनम को फोन किया, क्योंकि वो ही उसका एकमात्र सहारा थी।

अगले दिन ठंड़ी हवा खेतों को चीरती हुई गुजर रही थी। इंदर अपने छोटे से गाँव से निकल पड़ा था। मन में कोई उत्सव नहीं था, बस एक अधूरा सा दर्द और एक अनकहा सा बोझ। जयपुर की राह उसके लिए भारी थी लेकिन वह चलता रहा क्योंकि आज उसे किसी की जरूरत थी—**उसी दोस्त की, जो शब्द न भी बोले तो मन का भार हल्का कर दे।** इंदर आज एक बार फिर अपने "**मैं हूँ ना**" दोस्त से मिलने जहाँ शब्द कम पड़ जाएँ, पर साथ कभी नहीं, के पास पहुंच गया।

जयपुर सोनम के बताये समय एंव स्थान पर इंदर ने पहुंच सोनम को कॉल लगाया ही था कि दूर से बेबाक आवाज में हैलो करते हुए सोनम नजर आईं।

सोनम को देख इंदर के चेहरे पर हैरानी थी, पर आँखों में एक अजीब सी राहत जैसे **लंबे अंधेरे के बाद कोई जानी पहचानी रोशनी मिल गई हो।**

सोनम—बड़ी दूर से चल के आया होगा ना, थका नहीं रे तू। चल आ तूझे पहले आज तेरी फैवरिट वाली कॉफी पिलाती हूँ। फिर तूझे सुनूंगी सब सुनूंगी।

इन्दर—इन्दर ने हल्की मुस्कान के साथ हाँ कहा। **पर चेहरा बता रहा था कि मुस्कान कितनी मेहनत से निकाली गई हैं।**

कॉफी की चुसकियों के साथ इन्दर और सोनम का बातचीत का दौर शुरू हुआ।

इन्दर—मेघा की यादें बहुत परेशान कर रहीं थीं। किससे कहूँ समझ सकती हो तुम। बस इसलिए आ गया।

सोनम—इंदर! अब खुद को और मत थकाओ। **कुछ रिश्ते किस्मत की दहलीज पर ही थम जाते हैं।** मेघना चली गई तुम्हें भी अब आगे बढ़ना चाहिए।

इंदर कुछ पल चुप रहा। फिर मुस्कुराने की कोशिश करते हुए बोला–

इन्दर–तुम जानती हो सोनम मैंने दुनिया को अपना माना, उन सबको अपनापन दिया जिन्हें उसकी जरूरत थी। पर मेघा ने सिर्फ मुझे अपना माना। **मैं उस इंसान को कभी नहीं भूला सकता जिसकी एकमात्र दुनिया मैं था।**

सोनम–पर अपनत्व हमेशा सदा के लिए नहीं आता इंदर कई बार वो बस एक मौसम होता है, जो अपनी महक छोड़कर आगे बढ़ जाता हैं। तुम उस महक को पकड़कर क्यों जमे हुए हो?

इंदर–क्योंकि सोनम इसी महक में मेरी पूरी कहानी बसती थी। पर हाँ आपने इतना समझा दिया कि शायद मेघना मेरी जिंदगी का एक महकता अध्याय थी पर पूरी किताब नहीं।

सोनम ने उसके दोनों कंधों पर हाथ रखा और कहा–सही यही है इंदर **कुछ लोग हमारे सफर में आते हैं, हमें कुछ सिखाते हैं, हमें बदल जाते हैं, और फिर अपनी राह पकड़ लेते है।** और हम? हम बस उनके दिए सबक लेकर अगला पन्ना खोलते हैं।

इन्दर–हम्म्म्म।

सोनम–मान लो इन्दर। मेघना तेरी जिंदगी का अंतिम अध्याय नहीं, बस एक सुंदर अध्याय थी, जो पूरा हो चूका हैं। अब आगे बढ़ने का समय हैं।

इन्दर मेघना कहती थीं ना–''इन्दर अधिकारी बनेगा।''

सोनम बार बार इन्दर को समझाती। बार बार उसे मिलने आती। कभी मेघना की कसमें देके, तो कभी माँ बाप की भावुकता में। सोनम ने इन्दर को फिर से पढ़ाई पर लाने के लिए हर संभव प्रयास किया।

एक दिन उसने इन्दर से कहा–

''अगर सच में मेघना से प्रेम करते हो ना
तो खुद को इस तरह खत्म मत करो ''
इन्दर के प्रेम की सत्यता की कसौटी इस बात पर हैं
कि इन्दर अधिकारी बनेगा या नहीं।

इन्दर चुप रहा। सोनम की आँखें नम हो गईं–शायद उसकी कोशिशें हर बार हार रही थी।

इन्दर वो जहाँ भी होगी, पर तुम्हें इस तरह टूटा हुआ नहीं देख पायेगी। अपने लिए ना सही मेघना के लिए करलो।

उस दिन बहुत देर तक इन्दर कुछ नहीं बोला। वह सिर्फ आसमान की तरफ देखता रहा। शायद वर्षों बाद उसने पहली बार अपने दुख के बाहर भी कुछ सोचने की कोशिश की।

उसने सोनम के हाथ को पकड़ा और अपनी चेहरे के भावों से जता दिया कि हाँ, अब वो करेगा।

सोनम ने नम आँखों से इन्दर का गले लगा लिया।

धीरे धीरे उसने खुद को फिर से पढ़ाई में झोंक दिया। हालांकि अब उसके भीतर पहले जैसी महत्वाकांक्षा नहीं बची थी पर मेघना की याद ही उसकी अंतिम शक्ति बन गई थी।

कहते भी है ना–"**जो घायल हैं, वही घातक हैं।**"

रातों को जब दुनिया सोती रहती, मेघना का इन्दर जाग रहा होता। कई बार पढ़ते पढ़ते उसकी आँखें भर आतीं।

समय बीतता गया और एक दिन परिणाम आया।

वह अब अधिषाशी अधिकारी बन चुका था।

चारों तरफ खुशियाँ थीं। लोग बधाइयाँ दे रहे थे। और उसी भीड़ के बीच खड़ी सोनम की आँखें भर आईं।

तुम्हारी मेहनत का सबसे हसीन पल वो होगा
जब तुम्हारी सफलता देख
उन लोगों की आँखें भर आएँगी
जिन्होनें हर कठिनाई में तुम्हारा साथ दिया हैं।

सोनम ने मुस्कुराते हुए धीमे से कहा–

"देखा मेघना, तेरा इन्दर अधिकारी बन गया "

इन्दर ने भी आसमान की तरफ देखा, जैसे वो उस भीड़ को नहीं किसी ओर को खबर देना चाहता हो। आसूंओं की कुछ बूँदें नीचे गिर गईं।

और इस तरह कुछ कहानियाँ विवाह पर खत्म नहीं होतीं
वे इंसान के अंतिम साँस तक उसके भीतर धड़कती रहती हैं।
"प्रेम प्रकृति की देन हैं, इसका सिर्फ आरंभ होता हैं अंत नहीं
और जिनका अंत हो जाए, वो मोह हो सकता है प्रेम नहीं।

यह कहानी भी मेघना की यादों के साथ चलती रहेगी। मेघना इन्दर के भीतर धड़कती रहेगी–

"और अंत मैं वो दो लोग मिलते हैं,
जो एक दूसरे को ढूंढ भी नहीं रहे होते।"

Written by Dhanraj Beniwal
(Sarwat Shri Shaury)
Inspired by a True Story.
Part - Two Depends on You..